लोक कलाकार भिखारी ठाकुर

इआदन का खोह से ।

लेखक - डी. एन. राय

2.2.3.2

Reminiscences of Late Bhikhari Thakur

Bhojpuri Poet and dramatist in Bhojpuri

Written by -

D.N. Roy

Prabhunath Nagar, P.o.-Tandi Via Chapra

Dist. - Saran (Bihar) Pin-841301

स्व० भिखारी ठाकुर के
कल्पना के नारी अइसन
आपन हक का लड़ाई में
अड़े आ लड़े का दिसाईं
अडिग
आ दबावे वाला से दंगल लेवे में माहिर
आपन माई **स्वर्गीय लगना देवी**
के इयाद में समर्पित

सदा विनीत -
तहार माँझिल लड़का
जे बाट बटोहिया खानो
डेगे-डेगे जिनगी के डगर नापते
नापते जिनगी का आखिरी
पड़ाव में डेग विहीन हो गइल ।

किताब –

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर –

इआदन के खोह से

लेखक –

डी. एन. राय

सर्वाधिकार –

लेखक के अधीन

पहिला संस्करण –

अगस्त 2004

दाम –

30/– रुपये मात्र

मुद्रक :

श्री माधव मुद्रणालय,

मौना साढ़ा रोड, छपरा (बिहार)

दूरभाष :– 232272

अनुक्रम

भूमिका

1. कंगालन का मेदिनीपुर का ओर, जिनिगी के पहिला मोड़

2. कंगालन के धाजा-बाजा में भिखारी ठाकुर के एगो दोसर भगत

3. भिखारी ठाकुर के नाटकन में प्रगतिशीलता की छाप

4. शहर कलकत्ता से भिखारी ठाकुर के जीवन के नाता

5. रङ्गमंच के चाशनी में पगाइल गीत

6. भोजपुरी भाषा के थाती : कबीर आ भिखारी

7. भाषा के ओज में अलंकार की खोज

8. कुछ गीत अंग्रेजी में अनूदित

9. [illegible] स्वागत समारोह [illegible]

10. [illegible]

11. समाज के कई गो [illegible] आदमी [illegible]

12. भोजपुरी के [illegible] आ भंडार

13. भोजपुरी के [illegible]

14. [illegible] सहयोग से स्वागत समारोह

15. [illegible], [illegible]

16. भिखारी ठाकुर के [illegible]

हमार दू–चार गो आपन बात –

स्व० भिखारी ठाकुर के इआदन के साथ ।

साहित्य विधा के रूप में संस्मरणात्मक साहित्य, हिन्दी साहित्य में बहुचर्चित बा । एह विधा के अन्तर्गत आराध्य आ प्रात:स्मरणीय व्यक्ति के चित्रण के माध्यम से साहित्य सृजन होला । रेखाचित्र, स्मृति चित्र आदि अनेक रूप में साहित्यकार लोग एह विधा के व्यापक बनवले बा ! पाछे एह विधा के सम्प्रसारित कके बड़हन लोग के इआद के ना बलुक साधारण लोग आ 'सड़क छाप' गरीब–गुरबा के स्मृति परक चित्र के हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठित लेखक स्व० रामवृक्ष, बेनीपुरी जी आपन प्रसिद्ध किताब 'माटी की मूरतें' में अंकित कइले रहनी ।

हम एह छोट किताब के संस्मरणात्मक साहित्य अइसन चीज नइखीं मानत । एमें एगो स्वागत समारोह का सिलसिला में जनकवि भिखारी ठाकुर के साहित्यकला आ जिनीगी के छिटपुट बात बा । ई ऊहां का जिनगी के कथा ना ह, बाकिर एमे एकर कथांश जरूर बा । ऊहां के व्यक्तित्व आ कृतित्व के एमें समीक्षा नइखे बाकिर तकरीबन अर्द्ध शताब्दी आगे कोलकाता का एगो उपनगर में ऊहां का सम्मान में जे विचारगोष्ठी आयोजित भइल रहे, ओकर ई रिपोर्ताज ह आ साहित्यकार कलाकार पर रिपोर्ताज में एने–ओने से साहित्य के छौंक लागिए जाला ।

एमें उक्त समारोह का पृष्ठभूमि में जे लिखाइल बा ऊ समारोह के संदर्भ के अभावो में लिखा सकत बा बाकिर हम एमें इआदन के टूटल–टयटल कड़ी के अपना जानकारी से जोड़के ऊहां के जिनीगी के इतिहास के एगो भूलल बिसरल पन्ना खोले के कोशिश कइले बानी ।

स्व० भिखारी ठाकुर पर आधिकारिक लिखनीहार, बहुपठ आलोचक आ अकादेमिक विद्वानाचार्य लोग का ई सोचल असम्भव नइखे कि पचास–साल तक इ संस्मरण जेहन का तहखाना में लुकाइल काहे रहल आ एकरा के उजागर करे में एतना देरी काहे भइल ? पुस्तक रूप में निकालल अगर व्यवसाध्य रहे तब कम–से–कम पत्र–पत्रिकन में उछालल जरूरी रहे ।

एकरा बावत हमरा ई कहे में कवनों संकोच नइखे कि गोबर पट्टी आ

झोपड़पट्टी के चहेता एह कवि, कलाकार पर लेखन खातिर प्रिन्ट मीडिया आ अखबार में तब जगे दुलम रहे । तब के कोलकाता के कुछ हिन्दी दैनिक में एह आयोजन के गजमून निकलल होखी बाकिर भिखारी ठाकुर के प्रतिभा के जग जाहिर करे खातिर एह समारोह के तफसील निकालल सम्भव ना भइल ।

आउरो एगो वजह रहे । खाली अहिन्दी आ अभोजपुरी अंचल में ना बलुक, भोजपुरी, इलाकाओं में ऊहां के नाच तमासा के 'सट्टादार' तऽ रहेलोग बाकिर ऊहां के सामाजिक सुधार आ ऊहां का साहित्य में लपटाइल जीवन-दर्शन के 'खरीद्दार' ना रहे । जब ऊहां का साहित्य के भोजपुरी क्षेत्र में कुछ आकर्षण सृष्टि भइल तब हम अइसन जगे रहनी जहां से भिखारी ठाकुर जी पर कुछ प्रकाशन मुश्किले ना रहे, असम्भवो रहे ।

जब के हम बात लिखलेबानी तब ऊहां के सरल, सहज मनोरंजक ढंग से गीत, कवित आ लबारी आऊर स्वांग के रूप देखके लोग अगराव । बहुत लोग का ओठ पर उहां के गीत कवित, कहनाम लटकल रहे आ कुछ लोग का हृदय में ओह सभ गीत कवित में वर्णित नारी के लाचारी पर करुणा छलके बाकिर तबके सनातनी, युगीन परिस्थिति के चलते, एह सभ गीत कवित कला में अन्तर्निहित समाज के बदलावे खातिर अकुलाहट के सनसनाहट कहीं ना देखल जाव । कहीं-कहीं बुद्धिजीवी आ शब्दकर्मी लोग सुग्गा अइसन सुने बाकिर कहीं-कहीं एकर खिलाफतो होखे । नारी के अबला राखे के आ ओकर 'अबलाई' के पर्दा का अंदर रहे देवे के आ भाग्यवादिता से ढ़ाके के कमवेशी सभी जगे प्रयास रहे ।

भिखारी ठाकुर जी के प्रतिभा बहुआयामी रहे आ औपचारिक पढ़ाई के अभावो में ऊहां का आपन जन्मजात प्रतिभा के बल पर भोजपुरी के अलावा पीछे कादू मैथिली, उर्दू आ शाइद बांग्ला भाषा में गीत कवित के रचना करीं । उहां के सहज बुद्धि एतना प्रखर रहे कि उहां का शास्त्र आ दर्शन के जीवन-दर्शन आ साहित्य-सर्जन में रूपान्तरित कर दीं ।

विचार पक्ष आ कलापक्ष दूनू से ऊहां का प्रगतिशील रहनी आ ई प्रगतिशीलता ऊहां का कवनो मार्क्सीय दर्शन पढ़ के ना सीखले रहनी । उनके सामंतवादी परिवेश के मद्देनज़र ऊहां के सम्वेदनशीलता आ जिनगी के नंगा-साँच आ तद्जनित अनुभव ऊहां के शब्द के असली अर्थ में 'प्रगतिशील' बना देले रहे । प्रसंगत: प्रगतिशील साहित्यकार लोग मार्क्स के मत के हवाला देके कहेला कि राजनीतिक

क्रान्ति के बाद सामाजिक आ सांस्कृतिक आन्दोलन साम्यवादी समाज का स्थापन में वेशी कारगर होला । कुछ प्रगतिशील साहित्यकार लोग एह तीनों क्रान्ति के एक-साथ चलावे के वेशी उपादेय मानेला । भिखारी ठाकुर जी गांधी बाबा के क्रान्ति से प्रत्यक्ष रूप में युक्त ना रहनी बाकिर ज्ञात भा अज्ञात रूप से ओही क्रान्ति का साथ आपन सीमित दायरा में सांस्कृतिक आ सामाजिक क्रान्ति चलावे के शायद पक्षधर रहनी ।

मार्क्सवादी दर्शन में कहल जाला कि जब राजनीति से समाज के अतिरचना (Superstructure) बदलेला आ आर्थिक भौतिक धरातल पर जब परिवर्तन होला तब साहित्यकार कलाकार लोग का विचारधारा में परिवर्तन होला । इन खण्डन-मण्डन के सवाल नइखीं उठावत बाकिर ओह युग में आर्थिक भौतिक धरातल में कवनो बदलाव ना भइलो पर भिखारी ठाकुर जी के 'अनगढ़ कृति' समाज का विचारधारा में परिवर्तन खातिर एगो जबर्दस्त कदम रहे । प्रेमचंद के ई सलाह कि राजनीति के आगे साहित्य के 'मशाल' जलावे के उपक्रम होखे के चाहीं शाइद ऊहों का मने-मने चिंता करीं ।

एह किताब के केन्द्र-बिंदु अर्द्ध शताब्दी पूर्व आयोजित विचारगोष्ठी में ऊहां का कृति के विश्लेषित मुद्दा आज का प्रसंग में दिनातीत भा 'आऊट ऑफ़ डेट' हो सकेला बाकिर ऊहां के कृति के तबतक के अनुदघाटित तथ्य आ अनुत्तरित सत्य के लउकावे का क्षेत्र में ई एगो पहल कहल जा सकेला ।

आज जब भिखारी ठाकुर के कृति के हर मोड़ आ हर कोण के विचार करेवाला अनुसन्धाता एह क्षेत्र में जूटल बा तब ऊहां के कृति के हर मुद्दा आ प्रतिभा के हर पहलू पर सम्यक विश्लेषण होखे के चाहीं ।

प्रख्यात शिक्षाविद, वरिष्ठ साहित्यकार आ भिखारी ठाकुर के प्रतिभा के पारखी आ प्रशंसक हमार शिक्षागुरु, श्री सी० डी० पाण्डेय एम० ए० (अंग्रेजी) डिप०-इन- एड, विशारद (पिपरहिया, जि०-सीवान) के प्रेरणा आ आशीर्वाद हमर एह लघु रचना प्रस्तुत करे में विशेष रूप से सहायक भइल आ गुरुवर के चरण कमल में हमार भूईपड़ा पाँवलागन निवेदित बाटे ।

एह रचना में वर्णित भिखारी ठाकुर जी के स्वागत समारोह के उक्त आयोजन में, सहायक ऐने-ओने छितराइल, भूलल विसरल दिवंगत आ जीवित

मनीषिलोग के हम हृदय के अर्घ्य-अर्पित करत बानी । एह सभ महानुभाव में श्री एस.पी. वर्मा, बी. एल (अभिवक्ता नगर, गोपालगंज) आऊर श्री रघुनाथ सिंह 'विशारद' (पिण्डरा जि०-सारण) हमनी का बीच में बानीं । एह सभ के हमार सादर नमन बा ।

एह पुस्तिका के प्रकाशन में उत्साह-दान खातिर स्व० भिखारी ठाकुर के अनुरागी श्री रामदास राही जी (मंत्री, लोककलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम कुतुबपुर, सारन), श्री अविनाश नागदंश जी (प्रचार मंत्री, भा० भो० साहित्य सम्मेलन, आन्दोलन आश्रम, छपरा), श्री हरिचरण प्रसाद जी (अध्यक्ष-स्वर्णकार स्नातक मंच, छपरा), प्रो० कुमार कौशल जी (हाफिजपुर, सारन) हमार किताबन के मुद्रक श्री विजय कुमार जी (सामाजिक कर्मी आ माधव मुद्रणालय, छपरा के मालिक) आ श्री शिवनाथ जी (छपरा) के हम विशेष आभारी बानीं ।

हमार रूग्णावस्था में हमार पत्नी आ दू पुत्र-संजीव कुमार, सुमन कुमार आऊर पुत्रवधु, निहारिका आपन सेवा से हमरा के इ संस्मरण लिखे में सहायता कइले बा आ ओह लोग के सेवाभाव खातिर हम धन्यवाद देत बानी ।

स्व० भिखारी ठाकुर के पौत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद ठाकुर (कुतुबपुर, छपरा) अपना छोट उमिर में उक्त समारोह में उपस्थित रहनी आ उंहों का एह ऐतिहासिक समारोह के स्मृति-रेखा-चित्र एह पुस्तिका में दर्ज कराके एकर रोचकता आ व्यापकता बढ़वले बानी । एह सदाशयता खातिर हम उंहों के हियाभरल साधुवाद जनावत बानी ।

प्रभुनाथ नगर
पो० - टांड़ी
वाया छपरा
जि० - सारण (बिहार)
841301

विनीत -
धर्मनाथ
रचनाकार

भोजपुरी के नाट्यकार, नाच स्वांग के आयोजक आ अभिनेता, [illegible] के रचनाकार भिखारी ठाकुर से पहिले-पहल हमार भेंट विगत शताब्दी के पचासवां दशक में भइल रहे ! ऊहां का तब आपन नाच मंडली के साथ कोलकाता का एगो उपनगर में नाच नाटक देखा के कमाये गइल रहनी आ हम कोलकाता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर श्रेणी के इम्तिहान दे के अबगे निकलल रहनी । सामाजिक कार्यकर्ता आ बुद्धिजीवी लोग से हमार सम्पर्क बहुत दिन से रहे बाकिर इम्तहान का बाद हम पुरा पुरी एह सभ काम खातिर मुक्त हो गइल रहनी ।

प्रबुद्ध आ बुद्धिजीवी लोग का बीच तब तक ऊहां का अचीन्हा रहनी ! बाहर के तऽ बाते दीगर रहे बिहार आ भोजपुरी अंचलों में ऊहां के रंगधर्मी रचना आऊर काव्य-प्रतिभा बुद्धिजीवी आ कलमजीवी लोग के चर्चा के विषय ना रहे । भोजपुरी के प्रशंसक आ साहित्यकार, इतिहासवेत्ता, पुराविद् आ अन्वेषक राहुल सांकृत्यायन जी बहुत आगे एह 'अनगढ हीरा' भिखारी ठाकुर के अंग्रेजी नाट्यकार शेक्सपियर से तुलना कइले रहनी बाकिर एकर प्रचार कम रहे आ आज का अइसन भोजपुरी के भारतेन्दु, कालिदास आ तुलसीदास आदि शब्दन से तब ऊहां का विभूषित ना भइल रहनी । तब तक बिहार में 'नचनियां' के जे नजर से देखल जाव ओह से ऊहां के रूतबा कुछ वेशी जरूर रहे बाकिर ओही सभ परिधि में ऊहां के ढकेलल जाव ।

बंगाल में नाच नाटक के तर्ज पर 'यात्रा-दल' आ भारतीयगण नाट्य-संघ आ इप्टा तब बहुत दमदार, इज्जतदार रहे आ अकादमिक जगत में चर्चित रहे बाकिर आज खानी ओह समय तक ऊहां के कृतित्व आ व्यक्तित्व, साहित्यिक जगत, जनगोष्ठी आ पोथी-पत्रिका के विषय-वस्तु ना रहे । ओघड़ी ऊहां के गीत कवित्त भोजपुरी क्षेत्र में साधारण लोग का ओठ से सटले आ अटकले रहे बाकिर आभिजात्य साहित्यकार लोग एह सभ से परहेज करे आ ऊ लोग एह सभ गीत कवित के संस्कृत के पुरान समालोचक राजशेखर का शब्दन में, 'सतृर्णाभ्यवहारी' अर्थात, 'खर पतवार' समझे ।

तब भिखारी ठाकुर जी के नाच के शादी-विआह के लगन में एतना, पूछ रहे कि दिन-दिन ओकर सट्टा-राशि' के 'ग्राफ' ऊपरे ऊठल जात रहे ! ऊहां का लगन में बिहार का भोजपुरी अंचल में कमाई करीं आ लगन खतम भइला पर अपना नाचमंडली आ गिरोह के साथ कोलकाता के आसपास के भोजपुरी-बहुल

अंचल में नाच, तमासा देखा के कमाने चल आई एह सभ चटकलिया आ 'करखनिया' अंचल में ऊहां के अच्छा कमाइयो होखे ।

ऊहाँ के आगमन के प्रचार-प्रसार का दिसाई कवनों 'माइक पोस्टर' के जरूरत ना पड़े । मुहे-मुहे सभ जगे खबर पाट जाव आ नाच स्थल पर मजगर मेला नियर लोग के जुटान हो जाव । दू जून बढ़िया खाये-पीये वाला भोजपुरिया मध्यम वर्ग के का कहे, चटकल के मजदूर, ठेला - रिक्सा चालक, पेट पर गमछा बांध, दांत से दाब के दू पइसा के कमाई करेवाला लोग, 'दे दे राम दिलादे राम' रट लगा के भिक्षा के झोला लेके फेरा लगावे वाला लोगों, नाच तमासा के जादुगर भिखारी ठाकुर नामधारी एक अदद आदमी के देखे आ ऊहां के बात सुने खातिर कबहूँ शमियाना आ कबहूं खुला आसमान का नीचे रात कटावे आ ऊहां का नाच-स्वांग पर लहालोट हो जाव ।

गीत कवित्त के आलोचक लोग कहेला कि कवि कलाकार के काम लोग के खाली मोहित भा हिपनाटाइज (hypnotize) कर के ना हवे बलुक श्रोता पाठक के इंसान बनावे अर्थात 'ह्युमनेटाइज' करे के ह । दर्शक श्रोता लोग ऊहां के नाच स्वांग देखके ह्यूमनेटाइज केतना होखें आ आदमियत केतना सीखे, ई तऽ कहल मुश्किल बा बाकिर ऊहां का सभ के अपना रंग में ढ़ाल दीं आ अपना प्रति अनुरक्त बनालीं । साधारण लोग से एकाला होखे खातिर ऊहां का बड़ा सादगी से आपन परिचय दीं -

"नाम भिखारी, काम भिखारी रूप भिखारी मोर,
ठाठ पलानी मकान भिखारी चर्हुदिसि भइल सोर ।"

1. बंगाल के मेदनीपुरका ओर, जिनीगी के पाहिला मोड़ :- भिखारी ठाकुर जी का जीवनी पर तब तक कवनो किताब ना रहे आ जानकारी के सूत्र ऊहां के कहनाम रहे । ऊहां का कहला के मुताबिक नाच स्वांग के प्रति प्रेम तऽ ऊहां का मन में जरिये से रच-बस गइल रहे बाकिर जे तरीका के भोजपुरी अंचल आ विशेषत: ऊहां का गाँव-जवार में नाच आ नाट्क के प्रस्तुति होखे ओहसे ऊहां का सन्तुष्ट ना रहनीं । भड़ुआ लचारी से समाज तक कवनो अच्छा सीख आ संदेश ना जाव । ऊहां का कुछ बेहतर करे खातिर बेचैन रहनी । ऊहां का नाच तमासा देखावे के प्रेरणा बंगाल का मेदनीपुर-खड़कपुर से मिलल जहाँ रामलीला अइसन

'यात्रा पार्टी' आपन मनमोहन अभिनय के माध्यम से सर्वप्रियता हासिल कइले रहे। पीछे ऊहां का एह प्रसंग में लिखले बानी –

> "लालसा रहे बहरा जाईं, कूटावला के दाम कमाईं,
>
> गइनी मेदनीपुर के जिला ओहीजा देखनी रामलीला ।"

एहतरी मेदिनीपुर में यात्रा दल के समाजोपयोगी विषय पर नाच कौतुक तब तक प्रचलित नाच के नया रूप में ढाले-सजावे खातिर ऊहां के उत्साहित कइलस आ इहे आदर्श ऊहां के जिनगी के मोड़ निर्धारित कइलस । अइसन यात्रा-दल तब आ अबहूँ बंगाल में सभ जगे ख्याति अर्जन कइले बा आ वर्तमान समय में कुछ यात्रा दल तऽ विदेशों में नाम कमइले बा । प्रसंगत: इ ज्ञातव्य बा कि बंगाल के सिनेमा जगत के कुछ बड़हन हस्ताक्षर अपना अभिनय के ककहरा अइसने यात्रा दल में सीखले रहलें । एह तरी बंगाल भिखारी ठाकुर जी के प्रेरणा के स्रोत रहे ।

इह कहल तनिक विषयान्तर होखी बाकिर ई अवान्तर ना होखी कि हिन्दी साहित्य के महाप्राण निराला जी के जन्म एही सभ अंचल के अइसहीं परिवेश में भइल रहे आ ऊहां के यात्रा आऊर दंगल से ऊहों का शाइद बहुत प्रभावित भइल रहनीं ।

गत शताब्दी का मध्य भाग में एह सभ यात्रा पार्टी के कलेवर बदल गइल रहे आ तब 'राजा-रानी' के मिथकीय कहानी, प्रेम के दिवाना-दिवानी के अफसाना के जगह एह सभ नाटक तमासा के विषय वस्तु सामाजिक आ राजनीतिक जगत से उभरल सवाल बनल रहे । तब, बंगाल आ भारत का दोसरा अंचल में गण नाट्य संघ नाम से एगो नाटक के संस्था प्रतिष्ठित भइल रहे । प्रबुद्ध लोग का पृष्ठ-पोषकता आ कुछ राजनैतिक दल का संरक्षण में एह सभ नाटकन में वर्ग-वैषम्य, वर्ग-शोषण, सामंतवादी पूंजीवादी अत्याचार, मजदूर-मजलूम के भाईचारा आ सर्वहारा के एकजूटता के मुद्दा उछालल जाव । अइसन नाटकन में कलावन्त प्रशिक्षित युवत-युवती आ जुटल रहे । कालक्रम से बुद्धिजीवी लोग भी अभिनय आ किरदारी में जुटल । प्रसंगत: कहल जाला कि पीछे सिनेमा जगत के जबर्दस्त हस्ती, बलराज साहनी भी एक समय 'इप्टा' में रहलन आ बोलपुर शांति निकेतन के हिन्दी विभाग में जब रहलन तऽ एसभ प्रगतिशील नाट्यसंस्था से घनिष्ठ रूप से जुड़ल रहलन । अइसहीं बंगाल का परिवेश में भिखारी ठाकुर जी 'कोलकाता'

आ ओकरा उपनगर में आपन नाच नाटक देखावे जाईं ।

2. बंगाल के छाजा-बाजा में भिखारी ठाकुर के नाच के एगो दोसरे मजा :-

बंगाल छाजा बाजा नाच तमाशा के जगह हँ आ ओमें मनोरंजन के साधन कम नइखे बाकिर इंहाँका भोजपुरी लोग का क्षेत्र में भिखारी ठाकुर के नाच के आगमन के दिन गिनाय आ जहाँ कहीं 'नाच होखे, भीड़ उमड़ पड़े । तब ऊहां का बिहार आ भोजपुरी अंचल के पढुवा लोग के बीच' भोजपुरी क्षेत्र के जनवादी कृति के निरुपित करे खातिर कवनो माध्यम आ संस्था ना रहे ! हमार कोलकाता विश्वविद्यालय के छात्र जीवन का समय विश्वविद्यालय आ शिक्षण-संस्थान आदि में 'प्रवीण' 'नवीन' सभकरा के जनवादिता प्रगतिशीलता के लहर प्रभावित कइले रहे । तब बंगाल में बंगालेतर प्रगतिशीलता के मूल्यांकन करे के आ ओके यथोचित मर्यादा देवे के मानसिकता उभरत रहे । ओकरा पहिले से ई शाइद कवि गुरु रवीन्द्र नाथ ठाकुर के, 'पूरब पछिम सभ दुआर से नयका नयका उपहार' ग्रहण करे के काव्यिक संदेश से सम्भव भइल रहे । अइसन परिवेश के जेकर दिल के तहखाना में धरोहर इयाद के खतियान ईहां पेश करे के कोशिश करत बानी ओह सभके-बंगाल के रंगकर्मी, संचारमाध्यम से जुड़ल शब्दकर्मी आ राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता लोग का, श्रोता आ दर्शक के उल्लेखनीय भीड़ जुटवे वाला 'लोकधर्मी' कलाकार भिखारी ठाकुर के विषय में जाने के एगो विशेष आग्रह देखल गइल रहे ।

3. भिखारी ठाकुर के नाटकन में प्रगतिशीलता के छाप :-

भाषा-विज्ञान के विद्वान लोग कहेला कि अर्द्ध मागधी से निकलल भोजपुरी आ बांग्ला परस्पर नजदीक बाटे बाकिर ऊहां का प्रबुद्ध लोग का नजर में भोजपुरिया आ भोजपुरी भाषा के इज्जत तब कमे रहे । बेशी भाग भोजपुरिया लोग के गंवारू ठाट देखके, ऊ लोग भोजपुरी लोग के भाषा के 'गंवारू' मान लेले रहे । दरअसल में भोजपुरिया के वीरता आ भोजपुरी भाषा के उत्कृष्टता के उजागर करेवाला विलायती साहेब जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1885-1941) के बाद पढुवा लोग में एह भाषा के विषय में उदासीनता दूर करे खातिर कवनो रकम संस्थागत आ व्यक्तिगत इमानदार कोशिश ना भइल ! गैर-भोजपुरी क्षेत्र में काहे, बिहार आ दोसर भोजपुरी क्षेत्रों में तब पढुवा आ साहित्यिक लोग भोजपुरी के हाशिया पर फेंक देले रहे आ भोजपुरी के 'भदेस' समझे के परम्परा बन गइल रहे ।

विद्वान लोग मानेला कि प्रगतिशील चिंताधारा में काव्य के भाषा के सुघड़पन

से बेशी ओह भाषा का माध्यम से विचार के सम्प्रेषणीयता का ओर धेयान देहल जाला । आग्रहशील बंगलाभाषा-भाषी लोग के बुझावे में कठिनाई भइल रहे बाकिर भिखारी ठाकुर का नाच का प्रति ओह लोग के नजर आ नजरिया बदलल जब ओह लोग के जानकारी भइल की ठाकुर जी आपन 'अनगढ़ शैली' में जनता के यातना, संघर्ष आ सपना के आऊर युग-युग से अत्याचार का चक्की में पिसाए वाली बेजुबान अबला औरत के वाणी देत बानी । बुझे वाला लोग जानल आ मानल कि नाच का निरन्तरित परम्परा अइसन ऊहां का कृति में समाज का अभिजात्य वर्ग आ मजूर श्रेणी के दुश्मन 'हुजुर लोग' का प्रति कवनो मर्यादा दान नइखे । एह प्रसंग में प्रगतिशीलता के ध्वजा वाहक आ राजनीति के 'कार्ड होल्डर' लोग का शाइद एगो बात अखरल रहे कि ऊहां का रचना में चीख आ आसू बा, सामन्ती प्रथा के उत्पीड़न के कराह बा बाकिर अनर्थक आक्रोश नइखे आ कवित गीत के राग में भभकावे वाला कवनो, वेशी आगो नइखे । हृदयहीन समाज के अंध परम्परा के परख बा बाकिर उनका जनवादिता में राजनीति के पर्चावाजी अइसन सुर नइखे ।

तब भिखारी ठाकुर के लिखल किताबन में कुछ किताब कलकत्ते के सलकिया स्थित दूधनाथ प्रेस से छपल रहे बाकिर जिज्ञासु लोग के बुझावे खातिर ऊ सभ किताबो उपलब्ध ना भइल । भाषा के कठिनाई तऽ रहले रहे बाकिर हमनी का ओह लोग के कवनो सवाल के जबाब के जुमला जोड़े खातिर तइयार रहनी सन । ठाकुर जी के एह सभ सवालन के झमेला से हमनी का दूरे रखले रहनी सन ।

'नाटकन में 'डायलाग' कम आ गीत कवित्त बेशी बा एह सवाल के जबाब-काव्यधर्मी नाटकन के विशेषता ओह लोग खातिर काफी ना रहे । हमनी का ऊहां के कृति के गहन अध्येता ना रहनी सन आ आपन उत्तर के गाढ़ापन भा कनसिस्टेंसी (Consistency) जाँचल परखल हमनी का बलबूता के बाहर के बात रहे । ई सभ इयादगारी ह भिखारी ठाकुर के कृति के आलोचना ना ह । एह प्रसंग मे भिखारी ठाकुर के आज के आधिकारिक विद्वान लोग का सेवा मे हमार अर्जी बा कि ऊहां सभ हमनी का अइसन तदके कुछ अक्खड-फक्कड आ घुमक्कड़ लईकन के ऊलूल-जलूल उत्तर के संत के सीख, 'बालक बचनु करि अ नहि काना' के इयाद कके भिखारी साहित्य के छवि के म्लान करे वाला ना समझीं ।

नाटकन मे गीत कवित्त का विषय में अंगरेजी कवि वर्ड्सवर्थ के हवाला देबे के बात इयाद पड़त बा । हमनी का कहले रहनी कि कारुणिक कविता में पद्य के

प्रधानता आ उपयोगिता पर वर्ड्सवर्थ (Wordsworth) आपन किताब 'लिरिकल बैलेड्स' (Lyrical ballads) का भूमिका में लिखले बारन कि अइसन परिस्थिति भा भावना जेकरा साथ दुःख के आधिक अंश जुड़ल रहेला ओकर अभिव्यक्ति गद्य के तुलना पद्य में बेशी प्रभावकारी होला आ ठाकुर जी उहे कइले बानी । ठाकुर जी के तब तक रचना में विदेसिया, विधवा विलाप, बेटी वियोग गबरघिचोर आदि कितावन का गीतन में कवनो ना कवनो व्यथा लपेटल बा । एह बात पर ओह लोग का केतना एतबार भइल, कहल मुश्किल बा बाकिर उहो लोग निरुत्तर हो गइल आ शाइद ओह लोग के जिज्ञासा शान्त हो गइल । तब अनपढ़ लोग के लोकसाहित्य के जानेवाला आ ओह सभ के गरिमा माने वाला लोग ठाकुर जी के प्रति आकर्षित भइल रहे आ नया सिरा से उहां के कृति के 'मुद्दा' आ 'मूल्य' समुझे के कोशिश कइले रहे ।

4, शहर कलकत्ता से ठाकुर जी के गीतन के नाता

भिखारी ठाकुर जी का गीतन में कलकत्ता के जिकिर ऊहां का लोग के आउरो एगो आकर्षण के बिन्दु रहे । जवना समय के ई बात ह ओह समय 'कोहिनूर ग्रामोफोन कम्पनी' द्वारा शाइद 'विदेसिया' के रिकार्डिंग हो गइल रहे आ कम-से-कम कलकत्ता आ आसपास म बसल भोजपुरी आ हिन्दी भाषा भाषी लोग जान गइल रहे कि कुतुबपुर दियारा के भिखारी ठाकुर के हिया में कलकत्ता रचल बसल बा । थोड़ा बहुत भोजपुरी समझे बाला अभोजपुरी आ अहिन्दी भाषा-भाषी लोग ऊहां के गीत –

"पिया गइलन कलकत्तवा, तूरि दीहलन पति पतनी नातवा" –

सुन के कलकत्ता का उल्लेख मात्र से हुलसे लागे ।

प्रसंगक्रम में इ बात स्मरणीय बा कि 'पेट' आ 'पइसा' खातिर रेल से जूड़ल कलकाता आ जहाज से जूड़ल वर्मा (आधुनिक म्यांमार) में बिलखत पत्नी के छोड़ के बिहार से बहुत लोग जाव । भोजपुरी के ई गीत, 'रेलवा ना बैरी, जहाजवा ना बैरी, पइसवा भइले बैरी हो रामा' ..... इत्यादि एही घटना के संकेतित करेला ।

कलकत्ता में जाये के आकर्षण के केन्द्र कके भोजपुरी आ हिन्दी के कवि महेन्द्र शास्त्री जी लिखत बानी –

"जिसे कहीं शरण नहीं, उसका भी स्वागत है,

इस महासमर में सबको है खपना ।''

काम है हजारों जो हजारो प्रकार के हैं,

देर तक किसी को पड़ेगा नहीं अपना ।

झरिया से नईहाटी, हवड़ा, सियालदे, देह न चुराओ तो सुख नहीं सपना

दिल्ली है हाकिमों की, बम्बई भी मालिकों की, कलकत्ता मजदूरों का अपना''।

मजदूर श्रेणी के लोग ऐही खातिर बिहार में नौकरी का अभाव से अकुला के कलकत्ता का ओर भागे । ओह युग में कलकत्ता के एहतरी आकर्षण रहे कि नव विवाहित औरत पति का कमाई से आपन खाली पेटी, पहुती भरे खातिर कलकत्ते का ओर ताकस आ गावस -

'मारब झुलनिया के धक्का, बलमु कलकत्ता ले जइहें हो ।'

एह दिसाईं कलकत्ता सम्बन्धी भिखारी ठाकुर के सभ गीत युग के परम्परा के देन रहे आ ऊहां के अधोलिखित गीत सबका ओठ पर लटकले रहे -

1. 'मति जा हो पुरबवा पिया मोर,

पुरब देश में टोना बेसी बा, यानी बहुत कमजोर ।

2. करिके गवनवां भवनवां में छोड़िके

अपने पड़इलन पुरबवा बलमुआँ ।

3. लागि विदेशी में सुरतिया,

घर में रोअत बारी, बिआही औरतिया ।'

ओह घड़ी इ सभ गीत ऊहां के लोग, सुने आ जे इस सभ बुझे ओकरा ई सभ खूबे रूचे । मालूम होखे कि जब भोजपुरिया क्षेत्र के छवि उभारेवाला कवनो 'विज्ञापन एजेन्सी' आ 'संस्थान' ना रहे तब खेत-खलिहान से जिनीगी शुरू करेवाला, मड़ई में आ मचान पर जिनगी काटेवाला, कलकत्ता के कल-कारखाना में हाड़ तूड़े अइसन काम करेवाला, मजबूरी में कलपत मेहरारू से मुहं मोड़ेवाला, मेहनती आदमी के राग-विराग के 'कालजयी चितेरा' भिखारी ठाकुर के एह सभ गीतधर्मी नाटक, नाच में आधिक्य पवले रहे आ इ सभ कृतित्व अगड़ी-पिछड़ी जातिबन्दी से चिन्हित आ असंस्कृत भोजपुरिया के धूमिल छवि के निखारे खातिर ओह युग में एगो मजगर सांस्कृतिक जमीन देले रहे ।

5. रहस्यवादिता के चाशनी में पगाइल गीत -

ऊहां के गीत के हल्का पक्ष के साथ ओकर रहस्यवादी मुद्दा के बात उठल रहे । हिन्दी के समीक्षकशिरोमणि, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी लिखले बानी कि कविता खाली मनोविनोद ना देला आ गीत कवित्त का 'आत्मचेतना' के साधन होखे के चाहीं । ठाकुर जी के तब हाले में प्रकाशित 'बिरहा बहार' में धोबी-धोबिन के पद्यात्मक 'डायलाग' भा कथोपकथन मनोरंजन दान करे आ 'आत्मचिंतन' के साधनो जुटावे । एह सभ नाच का शुरुआत में जब ऊहां का व्यास आ सूत्रधार का रूप में गीत का गज्झिन बुनाई में ज्ञान के सूत्र जोड़ दीं तब चटखार के साथ गीत चबावेवाला आ लवंडा के 'झमक-झमक पायल' पर सिर हिलावेवाला लोगो 'ज्ञान गंगा' में गोता लगावे लागे ।

ई बात लिखल, अप्रासंगिक ना होखी कि 'जट-जटीन' आ डोमकच में 'डोम डोमिन' आऊर परम्परागत 'धोबी-धोबिन' के गीत नाच के माध्यम से भोजपुरी के 'अनाम' कवि लोग प्राचीन काल से, भोजपुरी में अभिजन के कम बाकिर 'अन्त्यज' आ दलित विमर्श के सन्दर्भ बड़हन बारीकी से उभरले बा । प्रसगत: आज साहित्यिक क्षेत्र में नारी आ दलित विमर्श बहुत चर्चित होत बा आ साहित्य सृजन के एगो नगका विधा के रूप में एके मानल जात बा । ई कहल अतिरंजना ना होखी कि भोजपुरी में एह विधा के बहुत पहिले प्रचलन हो गइल रहे आ ओही का चलते सरस्वती अइसन प्रख्यात हिन्दी पत्रिका में हिन्दी के शीर्षस्थ समीक्षक स्वनामधन्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी बरिस 1914 ई. में 'हीरा डोम' के भोजपुरी कविता प्रकाशित कके हिन्दी का मोतियन का हार में भोजपुरी के हीरा गांथ के हिन्दी-भोजपुरी-सहयात्रा के शुरुआत कइले रहनी ।

'बिरहा बहार' के उपरोक्त धोबी-धोबिन के सवाल-जबाब के घटना-क्रम में भिखारी ठाकुर जी मामूली बतकही में एगो बड़हन 'सत्य' के उजागर कइले रहनी । शाइद प्रतिभा के बल पर अइसहीं सृजन के साहित्यक भाषा में 'टाट का अंगिया में रेशम के बखिया लगावल' कहल जाला ।

कथानक में धोबिन-धोबी' का कठिन धंधा से मुक्त होके भरण-पोषण खातिर तरकारी इत्यादि उपजावे के काम अपनावे के प्रस्ताव करत बारी जकरा में सूत्रधार रूप में ऊहां के कहनाम बा कि सब्जी बेचलो में धोबी के आपन कर्म से पीछा ना छूटी आ बिना धोवले, साफ कइले सब्जी ना बिकाई । आपन कर्म करे के उपदेश देके शायद ऊहां का गीत के 'स्वधर्मे निधनं श्रेय: के संदेश देत बानी

नजीर के साथ ऊहां का कहत बानी –

'धोबी धोवेला साल दुसाला, धोवत अन्त फकीर/वेस्या धोअत चामधाम के/ देहऽ भिखारी नजीर – आऊर सवाल-जबाब के काट-छाँट के बाद दार्शनिक तथ्य के उद्घाटित कके लिखले बानी –

"ग्यान गंगा में आतमा कपड़वा / नयन भीतरवा के खोल / पटहा के परहेज जानिलऽ/साबुन सरबत बाटे बोल ।"

अइसन उत्तर-प्रत्युत्तर के कविज – पद्यति बंगाल में बहुत पहिले रहे आ एके 'कवि गान' कहल जाव । एह परम्परा में महारत हासिल कके एक जाना बांग्ला जानेवाला एन्टनी फिरंगी नामक अंग्रेज बांग्ला साहित्य का इतिहास में अमर हो गइल रहलन । बांग्ला कविगान के 'कटान चपान' लेखा, भिखारी ठाकुर का कृति में काट-छाँट का जरिये 'आध्यात्मिक रहस्य' के उजागर करेके 'काव्य-कला' देखसुन के ऊहांके लोग अचकचा गइल रहे ।

ठाकुर जी शुरु से विभिन्न रूचि के श्रोता आ दर्शक खातिर 'गीत कवित्त नाच नाटक' का माध्यम से विभिन्न उपकरण परोसे के कला में दक्ष रहनी । ऊहां के कला के समुचित आकलन सुनेवाला के मानसिकता आ देखे वाला का दृष्टिकोण पर निर्भर बाटे / शाइद एही बात के खुलासा कके आ लोग के रूचि का विषय में ऊहां का खुदे लिखत बानी –

'केहू जपत बा दरसन कइली, पाप गइल घोनसारी में

केहू जपत बा- लोग फँसवलस, टिकुली, चोली, सारी में ।"

ऊहां के कृति के देख-सुन के ई कहल नाजायज नइखे कि ऊहां के एगो आपन अद्वितीय शैली रहे जे शैली अतीत में केहू प्रस्फुटित ना कइले रहे आ भविष्य में आज तक केहू विकसित ना कइलस । स्मृति के विवरण देवे के क्रम से तनी हट के अब एगो प्रासंगिक बात कहे के हम दुस्साहस करत बानी । जब राष्ट्रीय नाट्यशैली ऊहां के कृति 'विदेसिया' के एगो विशेष नाट्यशैली करार देलं बा तब ऊहां के अइसन आऊरो सभ सृजन के काहे अनदेखा कइल जात बा ?

तुलना के बात हम नइखीं कहत, कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कुल्ह गीत सृजन के 'रवीन्द्र संगीत' नाम दिआइल बा । एह दिसाईं सीमित अर्थ में भिखारी ठाकुर जी के सृजन के एगो ऊहां का नाम से युक्त पृथक शैली चिन्हीकरण आ नामकरण में हमरा तऽ कवनो बाधा नइखे लऊकत ।

6. भोजपुरी भाषा के थाती, कबीर आ भिखारी :-

हिन्दी में एगो कहावत बा, 'ज्यों केले के पात-पात में पात त्यों सज्जन के बात-बात में बात'। जब कवनो बात उभरेला तऽ पियाज का छिलका पर छिलका अइसन ओह से लपटाइल बात परत-दर-परत उछलेला। तकरीबन अर्द्ध-शताब्दी के पहिले के मन का खोह से कुरेद के निकालला पर इयाद पड़त बा कि भिखारी ठाकुर का प्रसंग में 'पूरबिया भासा' के समाज-सुधारक आ संत कवि कबीर दास के चर्चा उठल रहे आ जम के चर्चो भइल। एह संदभ में इ कहल बेबूनियाद नइखे कि दूनू जाना का अपना युग आ ओकरा बाद उत्तर भारत में लोकप्रियता मिलल रहे आ दूनू जाना समाज में छितराइल बुराई के आपन चिंता के केन्द्र-विंदु बनवले रहले। फरक शाइद एतने बा कि कबीरदास जी धर्म के 'धप्पाबाजी' आ 'मजहबी दलाल' लोग के 'धज्जी' उड़वले रहनी आ भिखारी ठाकुर नारी-निर्यातन का दिसाई समाज के 'बड़हन समझेवाला लोग' के पगड़ी उछलले बानी। एगो आऊरो फरक नजर आवत बा कि एक जाना के कृति 'मेज' पर आ चौपाल में पढ़े के चीज बा आ दोसरा जाना के कृति चौराहा बाग-बगीचा में मंच पर देखेवाला बा।

भिखारी ठाकुर के प्रतिभा कबीरदास अइसन जन्मजात आ ईश्वर प्रदत्त रहे। भारत भोजपुरी क्षेत्र के 'दूनू गुदड़ी' के लाल कवनो औपचारिक शिक्षा के सुयोग का अभाव में आपन गीत कविता आ संगीत के रचना आपन अनुभूति आ सम्वेदना का बल पर कइले बा लोग। कबीरदासजी अइसन भिखारी ठाकुर इ कहेके हकदार बानी कि, 'मसि कागद छूऔ नहि, कलम गह्यौ नहि हाथ।' अपना सपाटबयानी के मद्देनजर दूनू जाना का ई कहे के पूरा अधिकार बा कि 'सांची गहत आ सांची कहत हौं।' आ अनुभूति के दिसाई 'दूनू जाना का ई लिखे में कवनो संकोच ना रहे कि 'तू कहे कागद की लेखी हम लिखे आँखन के देखी।''

दूनू जाना के आपन जिनगी आ समाज के उपेक्षा के बेबाक बयान आपन सोच के अनुसार सीमित अर्थ में जहां-तहां मिलल बा। कबीरदास एह विषय में लिखले बानी-

''मैं काशी का जुलाहा
करत विचार मन हीं मन उपजि
ना कहीं गया न आया।''

भिखारी ठाकुर अइसने सूर में आपन उपेक्षित जिनगी का शुरूआत का विषय में शाइद लिखत बानी -

"छूरा छूटल कैंची छूटल, छूटल नोहरनियाँ
बाबू लोग के हजामत छूटल नाच का करनियाँ ।"

कबीर दास जी स्वेच्छिक रूप में मन हीं मन उपजल बिचार के अपना कविता के उत्स बतावत बानी । शाइद अइसही कृति के कवहुं अंगरेज कवि वर्डसवर्थ, स्पोनटेनयस ओवर फ्लो ऑफ इमोशन (Spontaneous over flow of emotion) अर्थात 'स्वत: प्रवर्तित संवेग' के बहाव बोलले रहलन । भिखारी ठाकुर कबीरदास खानी आपन 'गीत कवित्त' का उद्गम का सम्बन्ध में लिखले बानी -

"तीस बरिस के भइल उमरिया रात दिन जिऊ तरसे
कहीं से गीत, कवित्त कहीं से लागल अपने बरसे ।"

7. भाषा का ओज में अलंकार के खोज -

भिखारी ठाकुर जी का गीत कवित्त के तह पर खोजला से काव्य के सम्वेदना के प्रेषणीयता के साथ लय, विम्बविधान आ आलंकारिक उपकरण मिलेला । ऊहां का 'स्वत: प्रेरित' कविता में 'भाव पक्ष' आ 'कला पक्ष' दूनू के सुन्दर संयोग बा । अपना सीमित अर्थ में श्रुत्यानुप्रास, विशेषण-विपर्यय, विरोध चमत्कार इत्यादि के दृष्टान्त मिलेला ।

जवना समय के बात हम लिखत बानी ओह समय तऽ ऊहां के कविता के संग्रह उपलब्ध ना रहे आ रहबो करीत तऽ जवना लोग से एकर चर्चा होत रहे ओह लोग के बीच में ऊहां के आलंकारिक कविता के दृष्टान्त 'अरण्य रोदन' अइसन होखित बाकिर आज पाठक लोग का मनोरंजन खातिर अधोलिखित उनकर दूगो कविता के नमूना पेश करके हम आपन उपरोक्त उक्ति के समर्थित करे के कोशिश करत बानी -

1. "पिया अइतन बूनिया में राखि लेतन दुनिया में
अधिका सतावेला सावनवा बलमुआ ।"

2. हमरा बलमू जी के बड़ी-बड़ी अँखिया से,

चोखे-चोखे मारे नैना कोर रे बटोहिया,

ओठवा तऽ काटे जैसे कतरल पनवा से ।

नकिया सुगनवा के ठोर रे बटोहिया,

दँतवा तऽ सोभे जैसे चमके बिजुरिया से,

मोछियन भंवरा गुँजारे रे बटोहिया ।

गते-गते इयाद के तह खुलल बा तऽ इयाद पड़त बा कि ऊहां का अभोजपुरी अहिन्दी क्षेत्र के कुछ रंगधर्मी कलाकार तक भिखारी ठाकुर के कृति बानगी पहुँचावे के कोशिश भइल रहे । युग तऽ ऊ उत्तर-औपनेशिके रहे बाकिर साहित्य में 'नीमन-बाऊर' के निर्णय खातिर अंगरेजी चश्मे के व्यवहार होखे । एक जाना अंगरेजी-प्रेमी, रंगधर्मी कलाकार आ आलोचक जब ई सुनलन कि एह नाच लबारी का मसालादार किस्सा स्वांग में आऊर कविता में Alliteration, Transferred epithet आ Oxymoron अइसन Figure of Speech भा काव्यिक अलंकार बा तऽ पहिले ऊ चिहुँक गइलें बाकिर पीछे उनका सुखद अचरज भइल ।

8. कुछ गीत अंगरेजी में अनूदित -

अंगरेजी प्रेमी कुछ बांग्ला भाषी प्रबुद्ध लोग खातिर कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संत कवि कबीरदास के एक सौ कविता के अंगरेजी अनुवाद के किताब बहुत आगे प्रकाशित भइल रहे आ कुछ लोग ओह सभ अनुवाद के माध्यम से 'पूरबिया' भाषा का अक्षय सम्पत्ति का प्रति आकृष्ट भइल रहे । पीछे साहित्यिक लोग भिखारी ठाकुर के गीत कवित्त अंगरेजी अनुवाद करेके जोर कइले रहे आ कुछ गीत कवित्त के अंगरेजी में अनुवादो भइल बा ।

बड़हन विद्वानन में ठाकुर जी के कृति के 'मुद्दा' आ 'मूल्य' के परखे वाला बहुभाषाविद् राहुल सांकृत्यायन जी रहनी । एहसभ कृति के छांट-छुट के पोख्ता करे के बात ऊहां का उठवले रहनी । अतीत में भिखारी ठाकुर के कृति के काटे-छाँटे वाला 'समानधर्मा' साहित्यिक नइखे लउकत बाकिर भोजपुरी के भविष्य अंजोर बा आ भोजपुरी का विशाल क्षेत्र में आगे केहू मिलिओ सकत बा । ऊहां के कृति के घटावे बढ़ावे के पहल जघन्यतम् अपराध आ साहित्यिक बेइमानी होखी बाकिर सन्दर्भ के स्पष्ट करे खातिर आ अंगरेजी पद-योजना में 'फिट' करे खातिर कुछ जोड़-तोड़ के हम ऊहां के कुछ गीत के भावानुवाद करेके ढिठाई कइले

रहनीं । ई सब गीत तब साधारण लोग का जुबान पर चढ़ले रहे आ ओठ पर अटकले रहे आऊर एह सभ गीत के संग्रह खातिर कवनो मुद्रित किताब के हमरा जरूरत ना पड़ल रहे । 'बेटी बेचवा' लोग का सम्बन्ध में ऊहां के गीत बा -

'बर खोजे चलि गइलऽ माल लेके घरे अइलऽ
दादा लेखा खोजलऽ दूलहवा, हो बाबूजी ।'

Daddy dear, have cares for my tears
of the age of my grand father,
Your searched my groom
haggard and old
And Cameback home with my price
is silver and gold

रूपिया गिनाई लेहलऽ पगहा धराई दिहलऽ
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबूजी

Daddy dear —
For your misdeeds,
don't brush aside yourfear.
You transferred my ownership.
And in the mart of marriage for my sale,
you made a bid
And treated your daughter like a goat and Kid.

9. नजरिया में बदलाव, स्वागत समारोह खातिर तइयार -

लोक कलाकार जनकवि भिखारी ठाकुर पर लेखक लिक्खाड़ लोग बहुत कुछ लिखले बा बाकिर ई कहे के हम ढिठाई करत बानी कि एह इयाद के तफसील के बतकूचन खानी ना समुझे लोग । भाषा के व्यवधान के बावजूद ऊहां के प्रबुद्ध साहित्यकार, रंग कर्मी लोग का भिखारी कृति के जाने-बूझे के इच्छा जागल रहे । एह बदलल परिस्थिति में कोलकाता के एगो उपनगर चौबीस परगना

के कॉचरापाड़ा में ठाकुरजी के सम्मान में एगो उल्लेखनीय समारोह के तइयारी भइल रहे आ एह समारोह का तत्वावधान में ठाकुर जी के कृतित्व के बहुत पहलू के लोग का परिचय मिलल ।

बंगाल में ई पहिला आ शाइद अन्तिम मौका रहे जब लीला करे वाला एह भोजपुरी के 'लाल' के करामात का लाली में समझदार रंग गइल । तब भोजपुरी के कसैली निगाह से देखेवाला आ भोजपुरी के 'गँवारू' बोली समझे वाला लोग का एकर साहित्य परखे के नजरिया में थोड़ा बदलाव आइल रहे । धीर-गम्भीर भिखारी ठाकुर जी पर एह समारोह के प्रतिक्रिया का भइल रहे ई कहल कठिन बा बाकिर कॉचरापाड़ा के उनकर प्रशंसक आ भोजपुरी जन समाज का अगरइला के कवनो सीमा ना रहे । आऊरो एगो बात भइल । ऊहां का शाइद एह सवाल के जबाब मिल गइल होखे जे सवाल आपन कला का विषय में ऊहां का नीचा लिखल कवित्त में उछलले रहनी -

'तनिक न आवे गार्व बजावे
काहे दू लागल लोग का भावे ?'

जिनगी का कवनो पड़ाव पर अपना कृति का सम्पर्क में ऊहां का अविश्वास जन्मल रहे आ ऊहां का इ लिखे के बाध्य भइल रहनी -

''..... जब इ छूट जाई तन मोरा
..... तेकरां बाद नाम होई जइहें
पंडित, कवि, सज्जन यश गइहेन ।''

एह अभिनंदन समारोह के देख के शाइद ऊहां का एकर अहसास हो गइल होखे कि सोहरत का शिखर लांधे में अब ऊहां का देर ना लागी ।

एह समारोह के पूरा विवरण हम पाछे देब बाकिर विचार करेवाला लोग हरेक कोण आ मुद्दा से विचार कके एर्क एगो ऐतिहासिक समारोह करार देले रहे । एके ऐतिहासिक कहे के कारण रहे । उ लोग जानल कि जेकरा के ऊ लोग समादर कइलस ऊ भाजपुरी साहित्य का क्षेत्र में युग प्रवर्तक होइहें । ई ऊ लोग साफ तरे देखल कि समादृत व्यक्ति 'कलम' के कवनो सिपाही भा 'जादुगर' ना हउअन बाकिर उनका कहन में अइसन 'जान' आ 'जादू' बा कि ऊ बिना कवनो अदाकारी के हजार-हजार लोग के मन-मिजाज के हिलकोर देत बारन । उनका नाटकन में

ऊपर से नाट्य शास्त्र के तत्व ना लऊके बाकिर ओमें 'हिया' के बात बा आ नाट्य शास्त्र का मोताबिक, हृदय सम्वाद रस पैदा करेला - "योऽर्थो हृदयसम्वादी तस्य भावो रसोदभवः ।"

ऊहां के नाटकन के जनप्रियता देख के लोग दंग रह गइल रहे । ऊहां के नाटक स्वांग के विषय 'बासिए' रहे काहेकि एह सामंती पुरूष-प्रधान समाज में 'जनाना' जाति का प्रति घिनौना आचरण के बात बहुत दिन से होतबा बाकिर मेहरारून के दर्दशा के बखान पहिला बार एतना तेज-तर्रार तरीका से ऊहां का करीं कि देखे सुनेवाला के कलेजा मुंह तक आ जाव । ऊ लोग का समझ में आवे में देर ना लागल कि पचास दशक के ओह बेचैन युग में प्रगतिशीलता के अनुगामी अइसन युग के माँग के अनुरूप आग उगले वाला कवनो गीत कवित्त ऊहां का ना करीं आ तब ऊहां के 'इप्या' के रंगकर्मी आ किरदार अइसन गर्मजोशी के 'डायलॉग' ऊहां का ना लिखीं आ बोली बाकिर आपन ठंढ़ेपन में 'सामन्ती व्यवस्था' आ सामाजिक अन्याय के बेबाक बखान के ऊहां का परवान पहुँचा देलेबानी । आपन बखान का जोर से गांव का संस्कार में उपेक्षित नारी का विलाप में ऊहां का अइसन बारूद भर देलेबानी आ फौलादी शक्ति के संचार कर देलेबानी कि पहिले अइसन नाच तमासा के मसालदार गीत सुने वाला 'छैल-छबिला' लोग भड़क जाला, 'रसिया' किस्म के मरद, लोग हरक जाला आ बेटी के कमोडिटी (Commodity) समझ के बेचे वाला बाप के कुकीर्ति पर लाजो लजा जाला ।

इ बात पाठक सभ ना भूले कि बहुत पहिले भिखारी ठाकुर जी के एतना प्रचार-प्रसार ना रहे आ उक्त समारोह में जब ऊहां का कृति के आकलन करें के एगो पृष्ठभूमिका तइयार करे के पहल कइल गइल रहे तब आज का अइसन इ काम आसान न रहे ।

ओह समारोह से जुड़ल सज्जन लोग के अता - पता समय के दूरत्व के चलते हम भूल गइल बानी बाकिर एह मुश्किल काम के जे सम्भव बनवले रहे ऊ लोग एह समारोह के माध्यम से आपन भाषा, भोजपुरी के उन्नति के जरिए आपन आ समाज के उन्नति के रास्ता सुगम करे के उद्देश्य से अनुप्राणित रहे आ ओह लोग के एतना संख्या ऊहां वर्तमान रहलो पर अइसन कुछ ना करके 'पीड़ा' बहुत दिन से हृदय में सालत रहे । शाइद अइसही अवस्था के मद्देनजर बहुत पहिले एगो कवि

लिखले बारन -

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटल न हिय के सूल ।'

एह स्वागत समारोह के सार्थक बनावे खातिर जे कवनो जतन ना उठा राखल ओमें दू जन भोजपुरी - रतन अभई तक हमनी का बीच में वर्तमान बानीं । ओमें प्रधान अथक समाजकर्मी आ तब जनता हाई स्कूल के सुदक्ष शिक्षक आ अब गोपालगंज जिला अदालत के अधिवक्ता शिवनाथ प्रसाद वर्मा आऊर तब स्थानीय रेल कारखाना में कार्यरत मजदूर लोग के नेता आ सारण जिला में बनियापुर थाना अन्तर्गत पिण्डरा गांव के निवासी भोजपुरी भाषा के नीरव आ अनन्य सेवक, रघुनाथ सिंह 'विशारद' रहनी । विशारद जी के पेशा तऽ रेल सेवा रहे बाकिर भोजपुरी के पुराना समर्थक राहुल बाबा का साहचर्य से ऊहां का ओह क्षेत्र में भोजपुरी के सेवा बहुत दिन पहिले से करत रहनी ।

10. दमदार व्यक्ति के असरदार कृतित्वः -

इयाद का सिलसिला में एगो आऊरो बात उल्लेख्य बा । जे ठाकुर जी के व्यक्तित्व के ओह दिन परखलस ओह लोग का ई कहे में कवनो हिलाहवाला ना भइल होखी कि ऊहां का व्यक्तित्व अइसन कृतित्वों असरदार आ गरिमामय बा । ऊहां का विनीत स्वभाव के आदमी रहनी । अचरज के बात इ रहे कि एक भव्य समारोह में छ फूट के लम्बा एह आदमी का विचार से दीप्त लिलार पर कवनो भावावेश के शिकन ना रहे । साहित्यिक भाषा में कहल जा सकेला कि ऊहां का मुंह पर 'शरद के चांद अइसन चमक आ सौम्यता' रहे । आत्मसंयम आ 'स्थित-प्रज्ञता' के ऊहां का प्रतिमूर्ति रहनी ।

ऊहां का आजाद तबीयत के आदमी, रहनी/समाज के अन्याय का चलते करमजली, बेसहारा औरत पर थोपल बेमेल बिआह के खिलाफ आवाज उठावल आ ऐह से जुड़ल आदमी के 'खूनी चेहरा से मुखौटा आ बेटी बेच के हाथ गरम करेवाला लोग के हाथ से दस्ताना' हटा के समाज का कटघरा में खड़ा करावल तब बड़हन हिम्मत आ पोख्ता व्यक्तित्व के काम रहे । आ खाली ठाकुरे जी निडर व्यक्ति खातिर इ सम्भव भइल रहे ।

जे मुद्दा आ सामाजिक मूल्य पर ऊहां का अड़ल रहनी आ समाज से लड़नी

ओह मुद्दा के उठावे वाला लोग का राजनीतिक नेता आ समाज सुधारक के चादर सहजे मिल जाला बाकिर ऊहां का कवनो पार्टी के पिछलग्गू ना भइनी, राजनीति के 'मदारी' लोग से भरसक दूरे रहनी । मालूम होखे कि जवना घड़ी के हम बात लिखत बानी अर्थात् पचास के दशक में भारत आ बिहार के राजनीति अंधा ना भइल रहे आ आज अइसन ई राजनीति, 'चोरी, डकैती, खून, चरस गांजा आ कोठा के धंधा' ना रहे । ऊहां का अगर इचको प्रयास कइले रहीती तऽ जुगत भिड़ा के प्रगतिशील छाप कवनो पार्टी से जुड़ के पइसा पद आ पावर (Power) के अधिकारी हो सकती । बाकिर ऊहा का 'कुर्सी चिपकू' ना होके जनता जनार्दन से जुड़ल रहल अपना आस्था आ प्रतिबद्धता खातिर जरूरी समझले रहनी । विषय का तह में तनी गइला से इ बात स्पष्ट हो जाई कि नारी-निर्यातन आ नारी मुक्ति का दिसाई ऊहां का ऊहे काम कइले रहनी जे नवजागरण काल में समाज सुधारक राजा राम मोहन राय आ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आ पीछे स्वामी विवेकानन्द जी कइले रहनी बाकिर प्रचार-प्रसार के माध्यम से आपन छवि उभारे का धंधा से ऊहां का अपना के अलग-थलग रखले रहनीं ।

नियरा से निरखे वाला लोग का ई जरूर मालूम भइल होखी कि ऊहां का पढ़ल कम रहनी, बाकिर बहुत गुनले रहनी । ऊहां का कम बोली आ ओकरा से कम लिखीं बाकिर जे बोलीं ओकरा के 'तऊल' के बोलीं आ जे लिखीं ओकरा के अनुभव का 'ठेहा' पर ठोक-बजा के लिखीं । आज का प्रगतिशील रचनाकार अइसन ऊहां का यथार्थ के धरातल पर खड़ा होके 'सामाजिक द्वन्द्व' के उभरले बानी बाकिर ए समाज में प्रतिद्वंद्विता खातिर ना बलुक सहयोग खातिर ।

आलोचक लोग कहेला कि व्यक्तित्व आ अनुभव मिलके रचना में रंग लावेला आ एह दूनू के संयोग भिखारी ठाकुर के ओह घड़ी तक के रचना आ बाद के रचना में 'सोना में सुगन्ध' ला देले बा । समाज के दशा पर आपन गहीर पकड़ आऊर सूक्ष्म विश्लेषण से ऊहां का बुझले रहनी कि पितृ - सत्तात्मक समाज व्यवस्था में नारी के समुचा जिनगीए नाटक हवे । ऊहां का आपन नाटकन में एही संघर्ष के विषय-वस्तु बनवनी ।

भिखारी ठाकुर जी का पहिले राहुल जी 'मेहरारून का दुर्दशा' में लिखले रहनी कि खाली बेटा का जनम पर बधाव बाजेला । लड़की का जनमते ओकरा जिनगी के दुखान्त नाटक के शुरूआत हो जाला । देखल गइल बा कि तनी बड़

भइला पर ओकनी के लेके 'कानाफूसी' छुप-छुपाव के नाटक शुरू हो जाला ! बड़हन भइला पर बिआह के नाटक में 'सुखान्त' दृश्य कम बा, दुखान्ते वेशी बा। बिआह का बाद एक तरफ सास-ननद, भौजाई आ दोसरा ओर ससुर, देवर आ मरद का त्रिभुजाकार संघर्ष में उठा-पटक घात-प्रतिघात के बीच औरत के जिनगी आखिरी सांस तक 'सांसत' में रहेला। परिवार के कोल्हु में पेरात आ जाता में दरात नारी के व्यथा के कथा तऽ बहुत लोग कहले बा बाकिर लोग का आँख में अंगुरी लगा के देखावे के कृतित्व भिखारी ठाकुर का बा ।

ठाकुर जी गाँव के गंवई परिवेश देखके अनुभव कइले रहनी कि पुरुष समाज नारी के 'सिन्दुर-इन्दुर' का टीका से एक बार दाग के आ सोहाग के 'चूड़ी लहठी' का बेड़ी से बांध के सेज-सहवास का खूंटा से अइसन जकड़ देला कि ऊ हमेशा खातिर 'पशु-बेड़ा' का अनबोलता पशु अइसन जिनगी कटावे के बाध्य हो जाली। नाटकन आ गीत कवित में ठाकुर जी ओही 'जनाना लोग' के आफत के कहानी ओही लोग का जुबानी सुनावे में महारत हासिल कइले रहनीं ।

भिखारी ठाकुर जी के कवित्व के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एगो मुद्दा अनदेखा कइल ऊहां का प्रति अन्याय होई। आज नारी 'सशक्तिकरण' दलित आ नारी-विमर्श के चर्चा के बहुत मंच आ 'फोरम' बाटे। ई सभ के जानेवाला ई मानत बा कि एमें कुछ साहित्यिक आ राजनीतिज्ञ लोग आ जूटल बा आऊर कुछ राजनीतिक फायदा लूटे के 'चूहा-दौड़' शुरू हो गइल बा। ई विमर्श का गरमबाजारी में कुछ साहित्यकार लोग प्रगतिशीलता के चोला धारण कके खेमाबाजी करत बा आ राजनीतिज्ञ लोग आपन स्वार्थ के 'चकवा चकई' के खेल-खेलत बा आ नारी, दलित के आपन चाल के मोहरा बनावत बा। एह प्रसंग में ई मालूम होखे कि भिखारी ठाकुर का एह सभ प्रयास का पीछे तमासा देखा के कुछ अर्थोपार्जन के उद्देश्य जरूर रहे बाकिर एह सभ ज्वलंत समस्या के 'तावा' पर आपन स्वार्थ के रोटी सेंके के उद्देश्य कतई ना रहे । जे युग में ऊहां का आपन नाटक कवित्त के माध्यम से औरत के औकात आ स्वाभिमान के उछाले के बीड़ा उठवले रहनी ओह समय अपना अस्तित्व खातिर मुंह खोले के बात तऽ दूर रहे ओह लोग का रोये के अधिकारो ना रहे । ओह लोग का पीड़ा के प्रतिकार खातिर कवनो 'वकील, दलील आ अपील' ना रहे ।

ऊहां का कलपत नारी के लोर के बटोर के 'विदेसिया' अइसन एगो नयका

नाटक विधा के सर्जना कइनी जे आज तक रंगधर्मी कलाकार लोग के पथ-प्रदर्शक भइल बा । नाटकन से संलग्न नाच-तमाशा भोजपुरी औरत के उत्थान आ जागरण खातिर बिगुल बजावे अइसन काम कइलस आ एह सभ के सुदूर प्रसारी असर भइल । असरदार कृतित्व के मद्देनजर अपना दुरावस्था के प्रति अचेत आ 'सूतल' नारी के बीच एगो सनसनाहट पैदा भइल आ ओह लोग का प्रति अत्याचार करे वाला मनमौजी मरद आ 'पति परमेश्वर' लोग का बीच एगो सुगबुगाहट के संचार भइल ।

भिखारी ठाकुर, बाल विवाह के कलपत नारी के अभियोग, गवना कराके विदेश में बिलाइल पति के पत्नी के 'छछनत जिया' आ 'हहरत हिया' के ऊफान, पतिनुमा मरद के 'बहु-पत्नीत्ववादिता' के खिलाफ असन्तोष के आ अबतक अनकहल कहानी आ अनदेखल दृश्य के मंच पर देंखा के समाज के बड़का कहावेवाला लोग के बैठक-खाना के कार्पेट के नीचे दबावल गलीज के उघाड़ देहनी । एगो लमहर समाजवादी चिंतक लिखले बानी कि भारत में नारी चाहे उच्च वर्ग के होखे भा नीच वर्ग के, सभ सामाजिक न्याय का दिसाई दलिते बा । वर्ग आ वर्ण निविशेष एह सभ दलित के पक्षधर भइल ओह जमाना में एगो साहसिक कदम रहे ।

ठाकुर जी सामाजिक न्याय खातिर आ सामाजिक क्रान्ति खातिर एगो अइसन पहल कईनी जेमें समाज के वर्ग के खेमा में बांटे के प्रयास ना रहे आउरू ओमें अबतक के क्रान्ति से बड़हन फरक रहे । ऊहां का एह समाजिक न्याय का साहित्यिक लड़ाई में परम्परा के मर्यादा देहनी । सामाजिक आ पारिवारिक बुराई के 'काँदो-कीचड़' ऊहां का अपना कृति में देखवनी बाकिर कवनो 'तबका' विशेष पर कीचड़ नइखी उछलले । 'बेटी-बेचवा' कवनो सम्प्रदाय आ जाति ना हवे । एमें धनी-गरीब उच्चनीच सभ बा । ओह लोग का लोभ पर ऊहां का सामुहिक रूप से प्रहार कइले बानी । अपना कृति में औरत के अखरत विपन्नता आ अरज देखले बानी बाकिर बौराइल साढ़ अइसन समाज के सींग मारे के सीख नइखी देहले । पराधीन भारत के सामाजिक बुराई के 'अलाव' का बीच से ऊहां का खाली नारी विषयक एगो अइसन मुद्दा निकलनी जे मुद्दा तब राजनीति विशारद लोग खातिर बड़हन मुद्दा ना रहे । ऊहां के कृति में आऊरो एगो बड़हन बात रहे । स्त्री विमर्श आ दलित विमर्श के आज के पक्षधर अइसन ऊहां का कृति में एह विषय के राजनीतिकरण नइखे ।

11. समाज के कई गो फलकन के समेटे वाला बहु-आयामी साहित्यकार –

भिखारी साहित्य के जानेवाला आ विश्लेषण करेवाला विद्वान लोग अब इ मानत ना कि ऊहां के कृति नारी के बेबसी के बखान के अलावे कई गो फलक समेटले बा । विविधता आ विचित्रता से भरल – पूरल ऊहां का रचना में ज्ञा वैराग्य, दुनिया के मक्कारी आ 'झूठ-फरेब' संयुक्त परिवार के विघटन, शहरी जीवन के बिछलन, नशाखोरी के दुष्प्रभाव, महतारी-बाप के ऊपेक्षा इत्यादि विषय का विभिन्न पहलू से विचार बा । समाज के एह सभ ज्वलन्त समस्या पर विभिन्न मोड़ आ कोण से विचार करके आपन नाटक गीत कवित्त का माध्यम से ऊहां का सुचिंतित राय देले बानी । एमें यथार्थवादी नाटक के साथ 'उपदेश वादी' कवित्त बाटे जेकर कला पक्ष आ भावपक्ष दूनू सराहनीय बा । आज-कल उपदेशात्मक (Didactic) कवित्त के चलन कम बाटे बाकिर जवना घड़ी के ऊ सभ रचना हवे ओह समय एकर प्रयोजन रहे ।

भोजपुरिया क्षेत्र आ भारत में पूजित राम, कृष्ण आ शिव पर ऊहां के भक्ति परक छिटपुट गीत के संकलन अब भिखारी ठाकुर के अनुरागी विद्वान लोग कइले बा आ ओह सभ संकलन से पाठक लोग के मनोरंजन खातिर संदर्भात्मक रूप से कुछ गीत कवित्त के टूकरा-टुकरी साभार उद्धृत कइल जा सकत बा । भक्ति क्षेत्र में ऊहां का सभ के जोड़त बानी आ समन्वयवादी तुलसीदास जी नियर 'हरि' आ 'हर' के बीच के खाई पटले बानी ।

राम जी का प्रसंग में ऊहां का लिखत बानी – ''रामजी के हो रतनार बा नयना' ..... आ कृष्ण जी का सम्बन्ध में लिखले बानी –

'पनिघट पर गगरी फोरलन मोर
यशोदा के बेटा मीठबोलिया
भइलन नगर में चोर ।''

शिव का स्तुति में 'डम-डम आ बम-बम' के 'अनुरणनमूलक ध्वनि' से पद के रचना कइले बानी ऊ सभ पद्य मनमोहक आ 'गेय' बाटे । शंकर के इआ करेके सलाह दे के ऊहां का लिखत बानी –

''हरदम बोलऽ शिव बम-बम-बम
कर त्रिशूल बसहा पर शंकर डमरू बाजत बा
डम-डम-डम-डम ।''

स्वांग तमासा में 'गबर धिचार' देश के न्याय प्रणाली आ पंचलोग के दाव-पेंच पर करारी चोट देत बा । कहानी के कथावस्तु आ प्लॉट (Plot) में फरक बा बाकिर एह नाटक के गलीज के मेहरारू आ गांव के रसिया युवक गड़बड़ी के चरित्र कथा-सम्राट प्रेमचंद के गोदान के झुनिया आ गोबर' के इआद दिला देत बा । इ खाली चरित्रे ना हवे, गांव के 'प्रतीक' हवे ।

गांव के विखंडन आ संयुक्त परिवार के विघटनो पर ऊहां के तीखा प्रहार बाटे आ अइसन विघटन के कुफल के बखान में ऊहां का लिखले बानी -

'लोग लाज सबऽ खोके भाई से अलग होके
सहत बानी बहुतऽ विपतिया ।'

परिवार का सूझबूझ के बिलइला पर रिश्ता में रुखड़ापन आ बीचाहट के एगो अइसन घड़ी उपस्थित कर देला कि 'जेकर देहनी साथ उहे चलावत लात' के स्थिति आ जाला । एह से आगाह करेवाला कवित्त खाली दर्द के बखान नइखे करत बलुक 'दवाईओ' बतावत बा । गांव के चाल चरित्र आ चेहरा के बूझे में भिखारी ठाकुर कमाल हासिल कइले बानीं आ परोक्ष रूप से एकर बदलाव खातिर नुस्खा भी बतलवे बानी । शाइद अब एही सभ चाल चरित्र आ चेहरा के बदले के असरदार कोशिश के समाजशास्त्री लोग 'सोशल इन्जिनियरिंग (Social Engineering) कहत बा ।

तब आ अबहुँ देश में दू गो देश बा - गांव आ शहर । मरद गांव से शहर आके 'राहरुआ' हो जाला आ सौतिन के 'सौगात' जुटावे में ऊ एतना रम जाला कि ओकरा समूचा परिवार के भूल जाये में बेशी समय ना लागे । आ बिलखत नारी के सुध-बुध खोके 'रसियो' हो जाला । अइसही नारी के विलाप के बेबाक बखान में ऊहां का लिखत बानी -

"पियवा गइलन कलकातवा ए सजनी
तूरि देहलन पति-पत्नी नातवा ए सजनी
कहतऽ भिखारी नाई आस नइखे एको पाई,
हमरा से होखे के 'दीदार' हो बलमुआँ ।"

उनकर वर्णित 'विधवा काकी' के विलापो कलेजा काढ़ लेता । दैवयोग से

ईहो हिन्दी कहानी - उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के 'बूढ़ी काकी' के इयाद दिला देत बा बाकिर भिखारी ठाकुर के विधवा काकी के वर्णन के अलग अंदाज आ उद्देश्य बा। ठाकुर जी आपन कथ्य के जानदार आ शानदार बनावे खातिर संस्कृत के 'चम्पू काव्य' अइसन गद्य-पद्य दूनू के सहारा लेले बानी।

भिखारी ठाकुर नारी बेवशी के 'कालजयी चितेरा' रहनी। ऊहां के वर्णित विधवा काकी आजो गांव गवई में 'जाऊत' के गोहरावत बारो आ ऊहां के निम्नलिखित विलाप आजो गांव में मुखरित होत बा·-

"बबुआ समुझऽ मने तोहरे हवे सभऽ धन
'काकी' करिहेन जूठवा के आसरा हो बबुआ
दिन रात दूनू साम घरवा के करब काम
लुगरी फींचबऽ हम पतोह के हो बबुआ।"

गांव का 'नसाखोरी' के बुराइओ पर ऊहां का जम के कलम चलवले बानी। स्वाधीनता संग्राम का दिन में 'नशा वर्जन' आजादी के लड़ाई के एगो लमहर मुद्दा रहे आ आजो समाज से एकर उत्खात खातिर नुक्कर नाटक, इत्यादि से प्रचार-प्रसार कबहुँ-कबहुँ होला। ऊहां का नशाखोरी के भयावह दुष्परिणाम के वर्णन में लिखत बानी -

"बेटा-बेटी भूखे मूअस माई बापू भइलन सूर
मेहर का तन पर वस्तर नइखे बबुआ नशा में चूर।"

बूढ़ा बाप मतहारी के फजीहत आ उपेक्षा गांव-शहर, देश-विदेश में सभ जगे चलत बा। इ परिवारिक आ सामाजिक अपराध अब दण्डनीय करार देहल गइल बा। एकरा विरोध में ऊहां का आवाज उठवले बानी आ अइसन 'उपेक्षा' के पर्दाफाश करके ऊहां का लिखत बानी -

"जिअता में बनिके पतोह पूत,
करलन खूब ललकारी,
मूअला पर पिण्डा पानी, दान होई सोना-चानी
लोग खाई पूरी तरकारी।"

इआद का क्रम में एह सभ प्रसंग के कवनो जरूरत नइखे। हमनी का सभ

रचना से तब तक परिचित ना रहनी सन बाकिर एह विषय में एकमत रहनी सन कि अइसन समय जरूर आई जब भिखारी ठाकुर जी भोजपुरिया साहित्य जगत में साहित्य शिरोमणि के पद आ प्रशंसा पायेब । एह चर्चा के कम बेशी सार्थकता एही में बा कि ओह युग में कुछ शिष्ट साहित्यकार लोग जेकरा के अपना साहित्य - व्यवस्था में पायदान का नीचा समझे आ 'नचनिया बजनीया' का रूप में जेकरा के सामने ताली आ पीछे 'गाली' देवे, ओही आदमी अपना सच्चाई, साधना आ साहस का बल पर जनवादी साहित्य सर्जक लोग का अगिला पाँत में आ गइलन ।

साहित्य तपस्या ह आ शास्त्र में कहल बा कि तिरस्कार से तप के बढ़ोत्तरी होला आ सम्मान से तप क्षय होला - "तिरस्कारात् तपोवृद्धि, सम्मानात् तपोक्षयः ।" आज ऊहां के नाम साहित्य जगत के 'हाशिया' से सूर्खी में उठला पर 'एह शास्त्र वाक्य' के सच्चाई प्रमाणित होत बा ।

12. भोजपुरी के भगीरथ आ भंडारी -

पुराना युग में भगीरथ सबके हित खातिर 'गंगा' के भूतल पर ले आइल रहनीं । अइसहीं जन-जीवन के हित खातिर आ भोजपुरी के बोधगम्य बनावे खातिर भिखारी ठाकुर हमेशा कोशिश कइले बानी । तुलसीदास जी खानी भाषा आ कवित्त के 'सरसरि सम सबकर हित होई', आदर्श के ऊहां का समर्थक रहनी । शब्दन के ऊहां का गढ़ले नइखी बाकिर दोसरा भाषा से शब्द के ग्रहण कके भोजपुरी भाषा के शब्द-भण्डार के बढ़ावे में ऊहां का कोताही ना करीं ।

आज के स्थापित विद्वान आ भाषा के व्याकरणिक शुद्धता आऊर अशुद्धता पर विवाद करेवाला लोग का भोजपुरी में दोसरा भाषा के शब्दन के व्यवहार अखरेला । जे समय के हम बात लिखत बानी ओह समय दू-चार आदमी, जे भोजपुरी के चिंता करे, भोजपुरी के विकास खातिर ऊ लोग 'भोजपुरीतर' भाषा से शब्द उधार लेके भोजपुरी के राह आऊर विस्तृत करे के हिमायती रहे । अगर कबीर दासजी के भाषा नीति खातिर कहनाम के नजीर देहल जाइत तऽ ई कहल जा सकत बा कि ऊ लोग भोजपुरी के 'कूपजल' ना बनाके भाषा 'बहता नीर' के समर्थक रहे । भाषा में शब्द प्रयोग का दिसाई ऊहां के भोजपुरी भाषा के शीर्षस्थ समर्थक प्रिंसिपल मनोरंजन बाबू के मत के मानेवाला कहल जा सकत बा । स्मरणीय बा कि मनोरंजन बाबू आपन सुदीर्घ कविता में भोजपुरी शब्दन का प्रयोग

में उदार होखे के सीख देके लिखले बानी –

"इ हमार ह आपन बोली,
सुनि केहु जनि करे ठिठोली
जे-जे भाव-हृदय में भावे उहे उतरि कलम पर आवे
कबो संस्कृत, कबहूँ हिन्दी भोजपुरी भाषा के बिन्दी,
भोजपुरी हमार ह भाषा जइसे हो जीवन के स्वासा ।"

भिखारी ठाकुर के नाटकन में गीत कवित्त के अंश बेशी बा जेकरा के ऊहां का बंगाली भाषा का कथन शैली में 'गान' कहीं । गद्यात्मक कथोपकथन का ओर शाइद ऊहां का ओतना ध्यान ना दीं ।

हरेक नाटक का शुरू में ऊहां के 'व्यास' के रुप में उपदेश दीं । इ कथन नाटकन के 'आध्यात्मिकता' के सम्बन्ध में होखे । आ नाच में लबारी खोजे वाला लोग के इ भाषण आकर्षित ना करे बाकिर 'ज्ञान पिपासु' लोग के मन के ई खूब छुए । तब नाट्य शास्त्र के व्याख्याता लोग द्वारा वर्णित 'सूत्र धार' अइसन भूमिक में उहां का बोली आ अपना कहनाम में स्थानीय शब्दन के प्रयोग करे में ऊहां क भूल ना करीं । शाइद एही सभ विशेषता के आधार पर विद्वान लोग भिखारी ठाक् के भरत मुनि के परम्परा के नाटककार कहले बा ।

ठेठ भोजपुरी में गीत कवित्त करे के कौशल ऊहां का जनमघुट्टी में मिल रहे । कबहुं-कबहुं ऊहां का दोसर भाषा के बहु-व्यवहृत शब्दन के भोजपुरी व्यवहार कइले बानी । अपना प्रतिभा का बल पर दोसर भाषा के शब्दन के भोज में अइसन मांज दीं कि ऊ सभ शब्द ऊहां का गझीन कथन शैली में 'तिल-चा अइसन ना बलुक 'दूध पानी' खानी भोजपुरी में मिल जाव । एह कथन के व्या आ उदाहरण खातिर ऊहां का कृति से इने ओने से एक दू दृष्टान्त देवे के प्रयास करत बानी ।

ऊहां के चरित्र प्यारी धनिया विदेसिया के विलाप में कहत बारी –

'कहतऽ भिखारी नाई आस नइखे एको पाई,
हमरा से होखे के 'दीदार' हो बलमुआँ ।'

आपना भाषा शैली में 'दीदार' शब्द के भोजपुरी में बड़हन कुशलता में

का खपा देले बानी । आपन जिनीगी के सम्बन्ध में अंगरेजी शब्द के सार्थक प्रयोग कके ऊहां का लिखले बानी – 'नाच मंडली के धरि साथा, 'लेक्चर' दी कह के रघुनाथा ।'

ऊहां का आपन गीतन में 'आवा' 'इयान्त' आदि भोजपुरी प्रत्यय के व्यवहार कके शब्दन में गांव-गवईं के रंग ढाले के कोशिश कइले बानी । 'कलकात्ता' से कलकातवा, 'पान' से पानवा, 'छाता' से छातवा खानी प्रयोग से ऊहां का आपन पद्यात्मक भाषा के सरस बनवले बानी । ऊहां का रचना में इया प्रत्यान्त, सुरसतिया, मलकिनिया, विदेसिया आदि शब्दन के भरमार बा ।

आगे लिख चुकल बानी कि नाटक स्वांग के सूत्रधार के भाषण ऊहां का खुदे दीं आ ई सभ भाषण 'तोता रटान भाषा' ना रहे । परिस्थिति आ श्रोता के रूझान के अनुसार इ भाषा बदलत रहे । बंगाल में सबके अधर पर लटकल 'बंगला' शब्द के व्यवहार करे से ऊहां का परहेज ना करीं । भोजपुरी के 'मानकीकरण' के तब तक कवनो सवाल ना उठल रहे आ भाषा का शुद्धता-अशुद्धता पर हमनी के ऊहां से कवनो बात कहीं आ कबहूं ना भइल रहे बाकिर ई कहे में हमार कवनो हीला-हवाला नइखे कि भाषा के 'सब के ग्राह्य' बनावे खातिर आ विकासशील बनावे खातिर एह क्षेत्र में ऊहां का तनिको रूढ़िवादी ना रहनीं ।

आज भोजपुरी भारत का बाहर त्रिनिदाद, फिजी, गाइना, मारिशस, नेपाल आदि देश में आपन मान मर्यादा के झण्डा लहरावत बा । आज से डेढ़ सौ-दू सौ बरिस आगे पूर्वी उत्तर प्रदेश आ बिहार का भोजपुरी अंचल से ऊहां के आज के भोजपुरिया के पुरखा-पुरनिया आपन 'छान-छप्पड़' छोड़ के फटेहाल, फक्कड़ का रूप में सात समुन्दर पार क के एह सभ माटी में आपन डेरा डलले रहे । कहल जाला कि ऊ लोग आपन दू गो विरासत आ 'थाती' ले गइल रहे – एगो महतारी के भाषा भोजपुरी आ एकर तेवर तल्खी आऊर दोसर तुलसीदासजी के रामचरितमानस रामायण । इ दुनू विरासत के ऊ लोग अपना कलेजा से आजो लगा के रखले बा ।

अंगरेज प्रशासक आ भोजपुरी भाषा के तरफदार जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भोजपुरी के 'बहादुर लोग' के भाषा कहले बारन । शाइद भोजपुरी के इहे तेवर आह लोगके गौरांग प्रभु लोग का देश में आपन अस्मिता खातिर लड़े में समर्थ बनवले रहे । ई लोग आपन विरासत आ बहादुरी के चलते आज ऊहां का प्रशासन से जुड़ल बा आ भोजपुरी के परचम ऊड़ावत बा । भोजपुरी भाषा नीति निर्धारण आ

मानकीकरण के उन्नायक आऊर खांटी भोजपुरी के पहरूआ लोग का इ हमेशा ख्याल में रहे कि अइसन भोजपुरिया लोग का आपन लहजा में भाषा विकास में कहीं बाधा उपस्थित ना होखे ।

13. भोजपुरी के जन-संघर्ष से जोड़े में बेजोर -

कहल जाला कि भोजपुरी वेद के ऋषि विश्वामित्र के व्याघ्रसार (बक्सर) के शिष्य लोग के भाषा ह आ इहो कहनाम बा कि बिहार का माटी में कन्नौज के मिहिर भोज आज के भोजपुर के कवनो सुदूर अतीत में भोजपुरी भाषा के बीज के जे अंकुर रखलन पूरबिया लोग एके पनपवलस आ ओही भोजपुरी के अपना प्रतिभा आ सांगठनिक शक्ति से भिखारी ठाकुर जी एगो बड़हन गाछ में रूपान्तरित करे के कोशिश कइनीं । ऊहां का भोजपुरी के उदधारक आ सुधारक ना रहनीं बाकिर ऊहां का भोजपुरी गीत कवित्त के जन जीवन का मूलभूत संघर्ष से जोड़के आधुनिक भोजपुरी 'काव्य चेतना' के शुरुआत कइले रहनीं । कुछ माने में ऊहां का भोजपुरी कविता आ नाटक के सामन्ती शक्ति के सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़े के हथियार बनावे के कोशिश कइले रहनीं ।

कुछ आलोचक लोग के कहनाम बा कि भिखारी ठाकुर जी 'जयहिन्द के खबर' अइसन स्वाधीनतापरक किताब पीछे लिखले रहनी बाकिर स्वतन्त्रता के लड़ाई के अग्नि-युग में ऊहां का स्वाधीनता का लड़ाई से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ल ना रहनी । एह विषय में ई इयाद राखल जरूरी बुझाला कि आजादी के लड़ाई 'बहु-आयामी' होला । कुछ लोग कहेला कि खाली जेहल भरेवाला लोगे आजादी के लड़ाई लड़ेवाला ना होखे । आजादी खातिर लोग के तइयार करेवाला लोग आ एकरा खातिर जंग के राह के जंजाल दूर करेवाला लोगो आजादी के सहायक के रूप में पूजित होला । राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द अइसन मनीषि आ ऋषि अपना कलम आ कथन से देश से कुरीति आऊर भय दूर करे के कोशिश कके स्वाधीनता के रास्ता के सुगम बनवले रहे आ एह माने में ऊ लोग के स्वतन्त्रता संघर्ष के राहगीर के रूप में जानल आ देखल जाला । भिखारी ठाकुर जी तब लाचार बेचारी नारी के मुंह में ललकार आ हुंकार के आवाज संचारित कइले रहनी तऽ उहां का स्वाधीनता के प्रेरक का रूप में गिनाएब । शाइद ओह सभ ललकार के सुनके ओह युग में नारी घर का चहारदिवारी से निकले के साहस देखवले रहली आ कांग्रेस का 'जूलुस-जलशा' में शरीक भइल रहे लोग । ना

लोग का एह अवदान के गांधीजी खूब सरहले रहनी । काम तऽ बहुत लोग कर सकेला बाकिर एह लड़ाई खातिर सेनानी गढ़े के काम भिखारी ठाकुर अइसन केहु कलाकारे के बल-बूता के बात हवे । ऊहां का नारी के बलशाली बनावे के पहल कइले रहनी ।

हम तुलना नइखी करत बाकिर एह संदर्भ में अठारहवीं शदी के फ्रांस के क्रान्ति में कलमजीवी आ साहित्यकार लोग के अवदान के बात इयाद कइल जा सकेला । फ्रांस के लेखक 'वालटेयर' आ 'रूसो' प्रत्यक्ष रूप से लड़ाई में शामिल ना भइल रहे लो। बाकिर अपना रचना से क्रान्ति के अग्रगति प्रदान कके, क्रान्ति के अगुवा रूप में प्रशंसित भइल रहे । विगत शताब्दी के प्रथम चरण में 'बटोहिया' गीत के माध्यम से भोजपुरी गीत के 'कण्ठहार' रघुवीर नारायण जी भोजपुरिया लोग के स्वाधीनता युद्ध खातिर उद्‌बुद्ध कइले रहनीं । लोग कहेला कि तब हरेक कांग्रेस का अधिवेशन में एह गीत के बड़हन मांग रहे आ एकर प्रति हाथ-हाथ बीक जाव । ठाकुर जी के गीत कवित्त के बिक्री तऽ अइसन ना रहे बाकिर लोग ऊहां के प्रेरक नाटक तमासा देखे खातिर बेहाल हो जाव आ गते गते लोग सामाजिक अन्याय से लड़े खातिर प्रेरित होखे ।

14. सभकरा सहयोग से स्वागत समारोह -

बरिस 1954 में भिखारी ठाकुर के पं० बंगाल के चौबीस परगना जिला के कांचरापाड़ा नामक कलकत्ता के उपनगर में स्वागत सभा के बात आगें लिख चुकल बानी । कलकत्ता के उपनगर में आपन नाच नाटक देखा के ऊहां का कमाये गइल रहनी आ हमनी का एगो स्कूल का सहायता खतिर कुछ अर्थ संग्रह करेका उद्देश्य से कांचरापाड़ा में ऊहां का नाच के आयोजन कइले रहनी सन । इयाद का सिलसिला में एह आयोजन के विवरण हम एही कारण से देबे के जरूरत समझत बानी कि एह अवसर पर ऊहां के एगो स्वागत समारोह आयोजित भइल रहे । एह क्षेत्र में तब तक भिखारी ठाकुर जी के जन समावेश का बीच स्वागत-समारोह के आयोजन के ई पहिला अवसर रहे ।

सामूहिक प्रचेष्टा, सहयोग आ सजगता के अभाव में हमनी का समाज के 'घूरा में लुकाइल रतन' के चीन्हे में बहुत देरी करीले सन । ओह अंचल के कुछ बुद्धिजीवी, स्थानीय रेलवे कारखाना के कामगार आ कुछ रंगधर्मी कलाकार का सहयोग से एक साहित्य गोष्ठी के माध्यम से भिखारी ठाकुर के प्रतिभा, व्यक्तित्व

आ कृतित्व के चर्चा एह क्षेत्र में शाइद पहिलिका कोशिश रहे । ई बात लिखल अवान्तर नइखे कि ओह दिन का अभिनन्दन समारोह में चिमनी का धुवां आ ताप से तपल करखनिया लोग, तपल भूमूर में गोर रगड़त खेतिहर, पीच के जरत डगर पर तलवा घोंसत ठेला रिक्सावाला के साथ सफेद पोश साहित्यकार आ रंगकर्मी लोगो आपन उपस्थिति दर्ज करवले रहे । ओह स्वागत सभा में ठाकुर जी के मालायित आ चंदन चर्चित देखके सभकरा खुशी भइल रहे आ सुधिजन आऊर प्रबुद्ध लोग खातिर ठाकुर जी का कृतित्व के चर्चा के प्रसंग में ऊहां के अप्रतिम प्रतिभा के परिचय सुखद अचरज के विषय रहे ।

'अनगढ़ हीरा' कहावेवाला भिखारी ठाकुरजी अबतक अनगढ़ गाँव के लोग के बुझावे खातिर कंडा के कलम से 'कैथीलिपि' में लिख के भोजपुरी के गीत बांचत गावत रहनी आ बाबू लोग का चौमास आ बाग बगीचा में शमियाना का नीचे 'मचान' अइसन मंच पर आपन कृतित्व के अर्थ बुझावत रहनी आ रूप देखावत रहनी । आभिजात्य साहित्यकार आ प्रगतिशीलता के जुमला के जुगाली करे वाला लोग से फरके-फरके आपन 'समाजी मंडली' के साथ नाच के जमात के जमावत रहनी । जनवादी संघ आ मंडली का काट छांट, खण्डन मण्डन, शह आ मात, आलोचना का 'आवां' का आंच आ तपिश से ऊहां का दूरे रहनी । शाइद एह क्षेत्र में साहित्यिक आ प्रगतिशीलता के अनुगामी लोग से पहिलिका मुठभेड़ के ई मौका रहे । कवनो अइसन सभा के सफलता के जमानत तऽ ठाकुर जी खुदे रहनी बाकिर आयोजक लोग का इ फिकिर जरूर रहे कि ठाकुरजी के प्रतिभा के प्रतिबिम्बित करे खातिर जुमलाबाजी के सहारा ना लेके सार्थक आलोचना प्रत्यालोचना के माहौल प्रस्तुत होखे आ अइसने भइल । एह संग में ई बात कहल जरूरी समझत बानी कि भिखारी ठाकुर के गवेषक आ सृष्टिधर्मी रचनाकार लोग एह इयाद के खतियान के कवनो आलोचना ना समझे । इ एगो रिपोर्टिंग अइसन आलेख ह आ समझ के दूरत्व के चलते इयाद में इने-ओने भटकाव तऽ स्वाभाविक बाटे ।

15. शेक्सपियर से डेग-डेग पर मेल, सभकरा खातिर अचरज के खेल -

पचास बरिस आगे के रोजनामचा हेन-बेन हो गइल बा आ एह समारोह में आलोचना के आरम्भ ठीक कवना सवाल आ साहित्यिक मुद्दा आऊर मूल्य पर भइल रहे ई बात इयादन का खोह में बिला गइल बा बाकिर शेक्सपियर से भिखारी ठाकुर के तुलना जम के भइल रहे । शेक्सपियर से ऊहां से कुछ माने में डेगे-डेगे

पर मेल सुन के कुछलोग भकुआइल आ कुछ लोग अचरज से चिहुँकल । भोजपुरी क्षेत्र में इ जुमला तऽ बहुत लोग का जुबान पर रहे बाकिर तुलना का क्षेत्र में तब तक ईहां के विद्वान लोग दूनू जाना के रचना के समानता खोजे के शाइद प्रयास ना कइले रहे । एह समारोह में आयोजक लोग एह गम्भीर चर्चा के तहत बादविवाद खण्डन-मण्डन के सामना करे के भार एह 'स्मृतिचारण' के लेखक के दे देहल । शेक्सपियर के व्यक्तित्व आ कृतित्व से सुपरिचित एह विचार-गोष्ठी में बोझिल सवाल दागे के क्रम बहुत देर तक चलल आ ओमें भिखारी ठाकुर से ज्यादा शेक्सपियर पर चर्चा समय दखल कइले रहे । संगोष्ठी के बहस के मजेदार मुद्दा इहां देहल अप्रासंगिक ना होई अ जेहन का तहखाना में सहेजल कुछ इयादन के देवे के हम कोशिश करत बानी ।

जनकवि भिखारी ठाकुर के जन्म के करीब तीन शताब्दी तीन दशक आगे महाकवि आ नाट्यकार शेक्सपियर के जनम इंग्लैण्ड के 'स्ट्रेट फोर्ड आन एवॉन' में भइल रहे । लोग कहेला कि अब 'एवान' नदी ऊहां से दूर बहेले, बाकिर ओकरा घाट पर अवस्थित शेक्सपियर के गांव के नाम ऊहे बा । सांयोगिक समानता देखावे खातिर आ आपन तर्क के पक्ष के सबल करे खातिर हम कहले रहनी कि शेक्सपियर के जन्म अगर नदी के घाट पर भइल रहे तऽ भिखारी ठाकुर के जन्म नदी का पाट 'दियारा' के कुतुबपुर में भइल रहे । तर्क बचकानी रहे बाकिर जवानी निरूत्तर होखे के ना जाने ।

भिखारी ठाकुर के गांव कुतुबपुर के नाम के 'व्युत्पत्ति' का सम्बन्ध में हम आउरो एगो बतकूचन कइनी । ऊहां के गांव के नाम कवनो 'कुतुब' आ 'कुतुबदीन' के नाम पर ना पड़ल होखे तऽ अरबी भाषा के किताब के बहुवचन 'कुतुब' ई बतावत बा कि कवनो भूलल विसरल युग में इहां किताब आ पढ़ुवालोग के आधिक्य रहे । कुतुब अगर 'कुतुन' शब्द के अपभ्रंश रूप होखे तऽ कपास द्योतक एह शब्द के अनुसार इहां कवनो ऐतिहासिक युग में कपास के खेती आ रूई के कारबार के प्रधानता हो सकेला । ई हमार 'मन-गढ़न्त' बात रहे आ एह खातिर हम भाषा वैज्ञानिक आ विद्वान लोग के क्षमा प्रार्थी बानीं । ई कहे में हमरा कवनो संकोच नइखे कि ईहे सभ कह के अपना ढंग से एह सभा के हम महिमा-मंडित करे के चेष्टा कइले रहनी ।

दुनू आदमी के जिनगी के शुरुआत के घटना के जोड़ घटाव कके एगो

आऊरो मेल देखावे के जोगाड़ भइल रहे । आलोचक लोग कहेला कि शेक्सपियर का आपन कारबारी पिता का कारबार में मन ना लागे आ लंदन में भाग के जाये का पहिले आ थियेटर गठन करे का पहिले ऊ गांव में मटरगश्ती कके एगो अदालती मामलो में फंस गइल रहलन । गरीब माँ-बाप का सन्तान के रूप में भिखारी ठाकुर के गिरोहबाजी करेके आ फालतू झमेला में फंसे के अवसर तऽ ना रहे बाकिर ऊहां का आपन पैतृक पेशा 'जजमानी' पसंद ना करीं आ नाच देखे आऊर नाच के गरोह बांधे में लागल रहीं । एकरा के फिजूल काम समझ के ऊहां के महतारी-बाप क्षुब्ध रहे । गीत का माध्यम से ऊहां का एह घटना के उजागर कके लिखत बानी -

"बरजत रहलन बाप-महतारी नाच में तू मति जा भिखारी ।"

दुनू जना अपना औकात आ युग के जरुरत के अनुसार 'काव्यधर्मी नाटक' के प्रणयन आ मंचन कइले बा । सम्भाषण का बीच गीत कवित्त का गझीन गांथन से दूनू जना आपन नाटकन के सरस बनवले बा । संख्या कम बा बाकिर शेक्सपियर अइसन भिखारी ठाकुर अवसाद पूर्ण नाटक लिखले बानी आ जरूरत के मोताबिक 'प्रहसन' के अंश जोड़े में महारत हासिल कइले बानी आ ऐह सभ नाटकीय कौशल के साधारण दर्शक के बीच आपन कृति के मनमोहक आ दर्शनीय बनवले बानी ।

भिखारी ठाकुर के सभ नाटकन के पता हमनी का ना रहे बाकिर कुछ लोग से सुन के आ कुछ ऊहां का मुंह से अदाँय कके हमनी का ई कहे में सक्षम भइल रहनी सन कि आपन अनुभूति आ समझ के मोताबिक दुनू जाना नारी विज्ञान के समुचित उपयोग अपना कृति में कइले बा । लोग प्रेम के आधार पर दुनू नाट्यकार आ कवि, पत्नी, प्रेमिका, प्यारी रखेली के चित्रण कम वेशी कइलेबा आऊर दाम्पत्य 'प्रेम' के आलोकित कइले बा । एहो कहे से हमनी का बाज ना आइल रहनी सन कि शेक्सपियर का पछिमी प्रेम में देह का गैरहाजिरी में प्रेम नदारद बा भिखारी ठाकुर का कृति में पूरब के प्रेम महिमा-मंडित भइल बा जेमें 'भोग' कम तेयाग बेसी बा । "बिरहा के कुपवा में जोगिनी का रूपवा में तोहरे के अलख जगाइब हो बलमुआँ" आदि गीत के मद्देनजर कहल जाव तऽ एक जाना कवि के भाषा में कहा सकत बा कि ऊहां का साहित्य में प्रेम के 'फिजिक्स' कम बा 'मेटाफिजिदस' वेशी बा । विदेशिया नाटक में 'विदेशी' के ब्रह्म, रखेलिन के 'माया' आ प्यारी के 'जीव' समुझे के ऊहां के सीख एकरे ओर संकेत करत बा

शेक्सपियर के 'अन्तर्जगत' के बखान आ ठाकुर जी वहिंजगत के वर्णन के बातों उठल रहे ।

देश काल आ समाज के विभिन्नता के चलते दुनू मनीषि के नारी पात्र के चित्रण में फरक जरूर बा बाकिर नारी के लाचारी आ कबहुं-कबहुं ओह लोग के कुत्सित 'कारगुजारी' दिखावे में दुनू जाना के पैनी निगाह के परिचय मिलेला । लेडी मैकबेथ आ किंगलियर के लड़की अइसन नारी-सुलभ-गुण से विहीन नारी के प्रति शेक्सपियर के सुर तीखा बा आ ऐही तेवर तल्ख में ऊ नारी के दोसर नाम 'दुर्बलता' करार देके लिखत बारन -

'Frailty thy name is woman.'

बदहाल नारी खातिर ठाकुरजी आपन बखान के भाषा के लोर से सराबोर कर देले बानी, बाकिर कर्कशा नारी के फटकार देवे में ऊहां का कोताही नइखी कइले । 'भाई विरोध' नाटक में अइसही प्रसंग के उल्लेख बा जब भाई औरत क़ा बहकाव में आके 'भाई' से अलग भइल बारन । धोखेबाज नारी के धिक्कार देके ऊहां का लिखत बानी -

'कहत, भिखारी नरक में भइलें आस, धोखा देहलस औरतिया ।' 'गबर घिचोर' नाटको में नारी के अवगुण के देखल जा सकला ।

ओह घड़ी का छिट-पुट बात के हम सजा के लिखत बानी । आज का परिवेश में जब भिखारी ठाकुर विद्वान लोग के गम्भीर चिंतन के विषय बानी एकर महत्त्व खूब वेशी नइखे बाकिर इ तऽ इयाद के हमार थाती ह । आज के बात दीगर बा बाकिर ओह समय प्रबुद्ध श्रोता लोग एह सभ विषय में बड़हन रूचि देखवले रहे ।

ओह सभा में आलोच्य सभ मुद्दा के वर्णन ना दिआ सकत बा बाकिर साहित्य चिंतक लोग शेक्सपियर का प्रसंग में ठाकुर जी के मौलिकता सर्जनात्मकता आ युग पर आपन कृतित्व के छाप पर सवाल उठवले रहे आ आपन 'कद' आ ज्ञान के अनुसार हमनी का जबाव देले रहनी सन । आज जब भिखारी ठाकुर पर विस्तृत रूप से अनुशीलन आ चिंतन होत बा ऊ सभ जबाब 'स्तरीय' ना भी हो सकेला बाकिर भोजपुरी साहित्य सर्जक के दिसाई ऊहां के महिमान्वित करे के ऊहां ईमानदारी से कोशिश भइल रहे ।

कबहूं दू आदमी एक समान ना होला आ फेर सात समुन्दर पार विदेश में आ एगो अलग युग आ परिवेश में जन्मल शेक्सपियर से ऊहां के समानता ढूढ़े के आपन सीमा रहे बाकिर सहृदय श्रोता लोग एह सीमा के पूरापूरी उपलब्धि कइले रहे । स्वागत समारोह में शरीक कुछ सज्जन लोग ठाकुरजी के रचना भले ही ना पढ़ले होखे बाकिर उक्त कांचरापाड़ा में आयोजित ऊहां के नाच नाटक देखले रहे। इ देख के ऊ लोग हर्षित बाकिर आश्चर्यित भइल रहे कि जरूरत के अनुसार ठाकुर जी स्वरचित आ मंचस्थ नाटक में खुद अभिनय भी करी । विशेषज्ञ लोग के मुताबिक शेक्सपीयर अपना 'थियेटर' में विभिन्न चरित्र के किरदार के कामो करस ।

कहल जाला कि शेक्सपियर जब नाटक देखावे के व्यवसाय करस तब नारी पात्र के रूप में काम करे के औरत ना मिले । गवेषक लोग कहले बाकि शेक्सपियर के चेहरा नरम रहे आ जनानानुमा आवरण आभरण से सजा के ऊ खुदे नारी का भूमिका में अभिनय करस । ठाकुर जी के नारी भूमिका में काम करत नइखी देखले बाकिर जानेवाला लोग कहेला कि नाटक कला में प्रतिभा सम्पन्न भिखारी ठाकुर नारी चरित्र में किरदारी करे में माहिर रहन आ जरूरत के मोताबिक यशोदा, सीता आ सखी के 'पार्ट' ऊहां का करीं । ह एह तथ्य का समर्थन में आउरो एगो हवाला देवे के जरूरत महसूस करत बानी ।

जब हम ए सब इयादन के विवरण लिखत रहनीं तब एह सम्पर्क में भिखारी ठाकुर के नाट्य प्रतिभा के प्रशंसक आ हिन्दी के बड़हन आलोचक आ विद्वान के एगो संस्मरण हमरा पढ़े के सौभाग्य मिलल आ भिखारी ठाकुर सम्बन्धी एह संस्मरण के ईहाँ उल्लेख कइल हम आवश्यक नइखी समुझत । उक्त विद्वान के अनुसार बरिस 1948 ई० तत्कालीन कांग्रेसी मंत्री, जग जीवन राम का अध्यक्षता में दिल्ली में आयोजित कवनो एगो भोजपुरी सम्मेलन में शिरकत करे के ऊहांके मौका मिलल रहे । ओह आयोजन में जगजीवन राम जी के इच्छा रहे कि सम्मेलन में उपस्थित भिखारी ठाकुर जी आपन कला के कुछ नमूना पेश करीं । ठाकुर जी का मजबूरी रहे कि ऊहां का ओह आयोजन में अकेले गइल रहनी । कवनो 'साज' आ 'समाजी' ना रहे । बाकिर ठाकुर जी चुप बइठल ना रहनी आ तनिक भर भीत जाके धोती के तर-उपड़ ककरे मेहरारू अइसन 'घूघ' तान के सबके सामने आव गावे लगनीं - "सगरी देहिआ हो बलम के सरकारी हो गइल !' आशु-कवित्व क

बात तऽ लोग सुनले रहें बाकिर ऊहां का 'आशु – अभिनय कुशलता' पर सभ लोग दंग रह गइल। श्रोता लोग का ओह गीत का संदर्भ पर आऊरो अचरज भइल काहे कि ओह घड़ी जगजीवन रामजी के कांग्रेसी सरकार, लोग में जमीन बांटत रहे।

एह सभ तुलना के आखिर में बिना ऊहां से पूछले-अछले आ ऊहां का जीवन वृतान्त के बिना छंटले-फटकले एगो हम 'बेफाट' बात कह देहले रहनी। शेक्सपियर का सम्बन्ध में उनकर जीवनीकार लोग लिखले बा कि अठारे बरिस का उमिर में जब उनकर विआह भइल तऽ उनकर दुलहिन 'ऐन हैथावै' के उमिर छब्बीस बरिस रहे। डेगे-डेगे पर मेल खोजे का फेर में हम एतना विभोर रहनी कि हम कह देहनी कि ठाकुर जी के जनाना, मनतुरना देवीओ ऊहां से शाइद जेठे रहनीं। तब तक हमनी का ठाकुर जी के मन्द मुस्कान देखे के मिलल रहे बाकिर पहिला बार हमनी का ऊहां के ए बात पर ठठा के हँसल देखनी सन आ ई 'हंसीए' एह स्वागत समारोह के सफलता के 'गारन्टी' रहे।

16. भिखारी ठाकुर के अनुरागी के उद्‌गार :-

भिखारी ठाकुर आ शेक्सपियर का तुलना के क्रम में एगो बात उपसंहार का रूप में कहे के घृष्टता करत बानी जे बात के ना कहले रहलो नइखे जात। पढुवा लोग आ अंगरेजी के अनुरागी लोग जानत होई कि शेक्सपियर अपना उमिर के इकसवां बरिस आ जिनीगी के खाली तकरीबन बारह बरिस खट के अर्थात बरिस 1585 से बरिस 1598 तक नाटक कवित्त लिख के आ लंदन में मंचन कके एतना धन कमइलन कि ऊहां का बड़हन धनी का पात में आपन एगो जगे बना लेहलन। लंदन से जाके आपन गांव 'स्टेट फोर्ड औन एवान' में ऊ एगो बड़का घर कीन के शेष जिनगी ऐश-आराम से बितवलन। भिखारी ठाकुर जी अपना उमिर का तीसवां बरिस अर्थात 1917 से जिनगी का अन्तिम दम तक करीब पचास बरिस नाटक तमासा देखावत आ गीत कवित्त गावत बीता देहनीं बाकिर महल कहां एगो नयका मरइओ' ना बना सकनीं। एह बीच भोजपुरी भाषा के 'ठीकेदार', साहित्य के साहुकार' आ सिनेमा के 'सरदार' लोग ऊहां के मुम्बई तक खींच तान के ले आइल, शोषण के परवान पहुँचा देहल लोग बाकिर सुनीले कि कुतुबपुर के जे खपरैल घर में ऊहां का एह देश के 'पहिलिका अंजोर' देखले रहनी ओही में जिनगी कटा के 10 जुलाई बरिस 1971 ई० में लोकान्तरित हो गइनी।

ऊहां का जिनगी के बेशी भाग में बिहार से बंगाल आ असम तक नाच

नाटक देखावत 'बवन्डर' अइसन घुमनी । समाज का मानसिक बदलाव खातिर कबहुं-कबहुं अपना राग में आग उगलनी आ चित्त खातिर शांति के सुरो बजवनी । सामाजिक गांठ के सूता के 'कतिहारिन' अइसन जोड़े खातिर अपना जीनीगी के होम करे से भी बाज ना अइनीं । समाज ऊहां का जिनीगी के पल-पल के तास के पत्ता अइसन बांटे में कवनो कोर कसर ना रखलस । समाज आ भाषा के मंगल खातिर सौ जान से कुर्बान भइनीं बाकिर मालूम अइसन होला कि भोजपुरी समाज ऊहां के कुर्बानी के कर्ज अदहीं तक नइखे चुकवले ।

*****

बाबा के ऊ सुआगत के रंगारंग समारोह, जेकर रहे सभतर शोर-

प्रस्तुति - राजेन्द्र प्र० ठाकुर, कुतुबपुर
पौत्र - स्व० भिखारी ठाकुर।

हमार बाबा भिखारी ठाकुर के जे सुआगत समारोह के बरवान आ ऊहां के बड़प्पन के दास्तान एह संस्मरणात्मक किताब में भइल बा कचरापाड़ा (24 परगना, बंगाल) का ओह ऐतिहासिक समारोह में हम हाजिर रहनी। ओह समारोह के साथ आयोजित विचारगोष्ठी में तब तकलें बाबा के कृति पर प्रबुद्ध लोग के गहीर विचार सुने के हमरा सुयोग मिलल रहे। ओह क्षेत्र में एह सुआगत समारोह के मजगर चर्चा भइल रहे।

अंगरेजी, बांग्ला भाषा का भाषण के माध्यम से बाबा का कृति पर बहस-मुबाहिसा, साहित्यकार लोग के काट-छांट, विद्वान लोग के तेवर-तल्ख के मुद्दा तऽ ऊहां खूब कमे लोग बुझे बाकिर हम तब आपन छोटे उमिर में मुंहे-मुहे सुनले रहनी कि एह अंचल में एह रुतबा आ शोहरत के समारोह पहिले पहल भइल रहे। शाइद एही वजह से लोग एकरा के 'ऐतिहासिक' करार देले रहे।

भोजपुरी अंचल के नाच-तमासा में बाबा के बहुत रूप रहे-सूत्रधार से लेके सीता आ सखी तक। बाबा जब रूप बदल के आईं तब आपन 'वाचिक' कौशल से लोग के लुभाईं। व्यास का रूप में ऊहां के आध्यात्मिक बतकही के समुझदार लोग शांत भाव से सुने आ सोचे।

बबुआन आ कहीं-कहीं बबुआइन लोग का महफिल में ऊहांके कहनाम आ समाजी लोग का नाच स्वांग पर तालियो पड़े आ कहीं-कहीं कुछलोग गरिअइबो करे।

एह अंचल का महफिल में रसिया छाप 'छम्मोछल्ला झरेला' लोग, लवंडा यार के गीत लबारी पर, 'जी घालऽ राजा' के बोल बोले आ कहीं-कहीं सीटीओ ... बाकिर उक्त समारोह में बुधवान लोग के बीच दीगर नजारा रहे। बिहार के लोक-कला के बारीकी आ गीत-संगीत के विचार पक्ष, कलापक्ष के बुझे के ऊहां ... ल रहे।

बंगाल का एह सभा में ऊहां का पहनाव का उल्टा आपन चिराभ्यास के

अनुसार फुफुतीवहीन धोती के बदले उटांगी, ठेहून तक धोती, मिरजई पहिनले आ माथा पर 'मुरैठा' बांध के मंच पर बइठल रहनी आ कान पात के भाषण सुनत रहनी आऊर कबहूं कबहूं, आपन कृतित्व पर सवाल दागेवाला वक्ता लोग का ओर भावविह्वल होके टुकुर-टुकुर ताकत रहनी । ऊहां का सभ सारगर्भित सवाल के एकलौता उत्तरदाता आ एह संस्मरणात्मक आलेख के लिखनीहार श्री डी० एन० राय जी का ओर बारी-बारी से स्नेह पुलकित आंख से निरखी । आपन अगराइल भन के भाव उगिले खातिर ऊहां के बोले खातिर ओठ फड़के बाकिर सभा के मर्यादा ऊहां का जानत रहनीं आऊर आपन हिया के उभरल बात के ऊहां का सप्रयास घोंट जाईं । समाजी आ 'लंवडा लोग' अपने गावल गीत के 'सूटेड-बूटेड' आ 'गिटपिट' बोले वाला एह 'छपरहिया बाबू' के एह सभ के आवृति आ उद्धृति अपने लहजा में जब सुने तब मुंह दाब के हंसे आ दूर हटके कादू-कादू फूसुर-फूसुर करे । स्टेज पर हम बाबा का पीछे भकुआइल बइठल रहनी आ ओह कम उमिर में इ सोचत रहनी कि हमार बाबा केवल हमनी का परिवार के गौरव नइखी बलुक ऊहां का कुल्ही भोजपुरी समाज के गर्व आ स्वाभिमान के प्रतीक बानी ।

बाबा का साथ कलकत्ता में हमनी का ढ़ेर अचरज देखले बानी सन । हावड़ा के पूल से लेक कलकत्ता के बाइस्कोप थिएटर के अचरज हमनी का ऊँहे देखनी सन । 'कोहिनूर कम्पनी' द्वारा बाबा के 'विदेसिया' नाटक' के 'रिकार्डिंग' हमनी खातिर एगो अचरजे रहे । कांचरापाड़ा के प्रबुद्ध लोग द्वारा बाबा के अइसन मजगर समारोह में सुआगतो हमनी खातिर एगो बड़हन अचरजे रहे ।

अपना नाम के साथ 'नाई' जोड़ के बाबा शाइद आपन नम्रता देखाईं, हीनता ना । एहतरी शाइद बंगाल में नापित जात वेशी कके 'शिल' उपाधिधारी होला आ अइसन 'शिल' उपाधिधारी ऊहां बड़हन-बड़हन विद्वान दार्शनिक भइल बा । ठाकुर ऊहां 'ब्राह्मण' आ 'देवता' द्योतक शब्द ह । नाम के साथ ठाकुर सुन के आ 'चंदन चर्चित लीलार' देखके ओह दिन बाबा के मनाही कइलो पर आ गोर हटवलो पर ऊहां के गोर लाग के पुण्य कमाये के लोग के ठेला-ठेली लागल रहे ।

हम तुलना नइखी करत बाकिर सुनले रहनी कि 'शिप्रा' नदी के तट के का गड़ेरिया कालिदास जी कन्याकुमारी से कश्मीर धाँग के आ उज्जयिनी से प्राग ज्योतिषपुर लांघ के राजसभा में महाकवि भइल रहनी । गंगा काटल अरार पर बसल 'दियरा' के नाई भिखारी ठाकुर 'पूरबिया देश में आपन नाच तमासा से साधारण

लोग के सस्ता मनोरंजन देके राजदरबार से ना बलुक 'अवाम' का सभा में ओह दिन जनकवि, लोककलाकार के 'आख्या' पवले रहनीं ।

मजबूरन बाबा कलकत्ता में वेशी दिन ना ठहर सकीं । गोस्वामी तुलसीदास के सलाह -

'तुलसी वहां ना जाइये जहां जनम की ठाँव,
गुण अवगुण चितवत नहीं धर्‌यौ पुरानो नाम' –

जानलो पर ऊहां का 'जनम के ठाँव' छपरा आवे के बाध्य रहनी । तब सारण जिला के महाराजगंज थाना के रतनपुरा के सुकवि स्व० महेन्द्र शास्त्री के कविता-'सारण जिला घर बा जिअलो जहर बा' शाइद ऊहां का पढ़ले होखेब जेमे शास्त्री जी ईहां के हालत पर लिखले बानी -

"ढ़ेर एह जिलवा में अबरे दुबर बा,
जेकरा पर दिन-दिन 'कर' पर 'कर' बा
केकरा से का कहीं ओखरी में सर बा ।"

एह कठोर सांच के अनुभव रहलो पर ऊहां का आइल जरूरी रहे आ कोलकाता भा काँचरापाड़ा के कला पारखी लोग से दूर 'चन्ननपुर आ कुतुबपुर के कीच काँच आ 'खाला उच्चा राह' रौंदें खातिर फेर इहां आ जाईं ।

कला का दिसाईओं बिहार तब भाई भनीजाबाद आ जात-पांत के काँदो में सनाइल रहे । तब बंगाल अइसन ईहां नाकाफी कलामर्मज्ञ के चलते जिनगी का सांझ तक बाबा अपना प्रतिभा के स्वीकृति में उचित सम्मान से वंचित रह गइनी । अगर इहां खांटी साहित्य पारखी रहीत लोग तऽ बाबा नौकरशाही आ मठाधीश साहित्यकार लोग के दलाली के शिकार ना होखतीं ।

एगो आऊरो बात कहे के हम दुस्साहस करत बानी । अपना नाम का सत्यरूप में ऊहां का 'नाई' शब्द के व्यवहार जरूर करीं बाकिर जात के खेमाबाजी आ समाज के जात के आधार पर विभाजन के ऊहां का समर्थक ना रहनीं । आज के नारा, 'जात-पात' के करऽ बिदाई, सभ भोजपुरिया भाई-भाई' के शाइद ऊहा का समर्थन करतीं ।

प्रसंगतः हम एगो आऊरो बात लिखे के धृष्टता करब । शादी-बिआह का

दिसाई ऊहां का सामंतबादी मध्यवर्गीय कुंठा आ अति पवित्रतावादी चेतना के दबल स्वर में खिलाफत करतीं आ महात्मा गांधी अइसन समाज के आधा आबादी नारी के सामाजिक काम में हिस्सेदारी के समर्थन करतीं बाकिर मर्यादा विहीन यौनाचरण आ अच्छृंखलता के ऊहां का शाइद तरफदारी ना करतीं ।

बाबा सहज सरल आदमी रहनी । मतलब साधेवाला आदमी ना रहनी । अपना इज्जत खातिर सभ दांव पर राखे के तइयार रहीं । बाबा के सीढ़ी बनाके आपन-आपन किस्मत के उँचाई छूए वाला तब बहुत लोग रहे । भोजपुरी क्षेत्र में ऊहां के गाहे-बगाहे 'नवाजेवाला नवाजिदा लोग, सिनेमा के बम्बइया धन्धाबाज' ऊहां के कला साहित्य खातिर कुर्बानी के ठीक आकलन ना कइलन । एह संस्मरणात्मक किताब के लिखनीहार राय जी का एह निष्कर्ष से हम एकमत बानी कि ऊहां के 'अवदान' के कर्ज हमनी का अबहीं तक ना सधा सकनी सन ।

* * * * *